सरल हिन्दी व्याकरण

आठवीं कक्षा के लिए

LHI898

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
Odisha Board and NCERT
All Books with Solutions

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद,
ओड़िशा, भुवनेश्वर

ओड़िशा विद्यालय शिक्षा कार्यक्रम प्राधिकरण,
भुवनेश्वर

सरल हिन्दी व्याकरण

आठवीं कक्षा

तीसरी भाषा

पाठ्य पुस्तक निर्माण समिति :

डॉ. रघुनाथ महापात्र

डॉ. सुधांशु कुमार नायक

डॉ. लक्ष्मीधर दाश

पुनरीक्षण :

प्रो. राधाकान्त मिश्र

प्रो. स्मरप्रिया मिश्र

डॉ. सुधांशु कुमार नायक

डॉ. लक्ष्मीधर दाश

डॉ. अजित प्रसाद महापात्र

संयोजिका:

डॉ. सविता साहु

प्रकाशक:

विद्यालय और गणशिक्षा विभाग,
ओड़िशा सरकार

संस्करण: २०१८
२०१९

प्रस्तुति :

शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद
ओड़िशा, भुवनेश्वर

और

ओड़िशा राज्य पाठ्यपुस्तक प्रणयन और प्रकाशन संस्था, भुवनेश्वर

मुद्रण : पाठ्यपुस्तक उत्पादन और विक्रय, भुवनेश्वर

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

आमुख

ओड़िशा सरकार के आदेशानुसार आठवीं कक्षा को प्राथमिक शिक्षास्तर में शामिल करने के बाद उसकी पाठ्य पुस्तकों का निर्माण आदि की जिम्मेदारी शिक्षक शिक्षा निदेशालय को सौंपी गई । यह कार्य पहले माध्यमिक शिक्षा परिषद्, कटक द्वारा किया जाता था । प्रारंभ में उस संस्था के द्वारा प्रकाशित पाठ्य पुस्तकों को यथावश्यक पुनरीक्षण के बाद स्वीकार कर लिया गया है । विद्यार्थियों को शैक्षणिक कार्यक्रम में अधिक सक्रिय करने हेतु अनुप्रयोगात्मक अभ्यास आदि जोड़ा गया है । आशा है, इससे शिक्षक और विद्यार्थियों के लिए यह पुस्तक अधिक उपयोगी होगी ।

हम माध्यमिक शिक्षा परिषद्, ओड़िशा, कटक के प्रति आभार व्यक्त करते हैं और पुनरीक्षक मंडल का धन्यवाद करते हैं ।

COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

निदेशक
शिक्षक शिक्षा निदेशालय तथा
राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्,
ओड़िशा, भुवनेश्वर

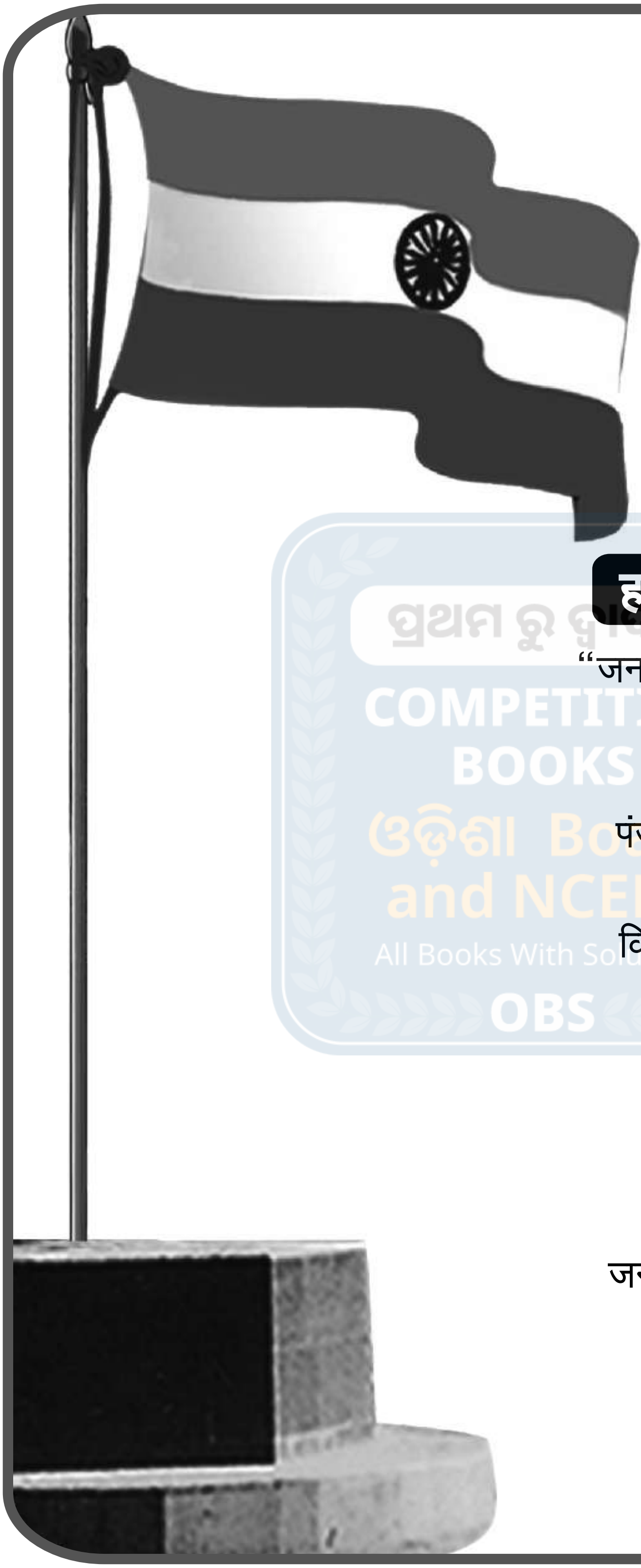

हमारा राष्ट्रीय संगीत

"जन-गण-मन-अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता

पंजाव-सिंधु-गुजुराट-मराठा
द्राविड उत्कल बंग
विन्ध्य-हिमाचल-यमुना गंगा
उच्छल जलधि तरंग

तव शुभ नामे जागे
तव शुभ आशिष मागे
गाहे तव जय गाथा
जनगण-मङ्गल दायक जय हे,
भारत भाग्य विधाता,

जय हे जय हे जय हे,
जय जय जय जय हे।"

COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

यह पुस्तक

बालक बचपन से ही अपने परिवेश से भाषा सीखता है। यह उसकी मातृभाषा या प्रथम भाषा कही जाती है। आगे चलकर वह औपचारिक शिक्षा द्वारा अपने भाषा-ज्ञान को बढ़ाता है, अन्य भाषाएँ भी सीखता है।

ओड़िशा के विद्यार्थियों की मातृभाषा ओड़िआ है। हिन्दी उनके लिए अन्य भाषा है। इसे सीखने में अधिक सावधानी और मेहनत की जरूरत है।

इस पुस्तक के प्रथम अध्याय में उन विषयों का समावेश किया गया है, जिनसे विद्यार्थियों के पूर्वज्ञान की पुनरावृत्ति और परिमार्जन हो।

चूँकि हिन्दी ओड़िआभाषी विद्यार्थियों के लिए अन्य भाषा है, इसलिए इसकी ध्वनियों के उच्चारण में विद्यार्थी कुछ कठिनाइयाँ महसूस कर सकते हैं। हिन्दी और ओड़िआ की जिन ध्वनियों के उच्चारण में अन्तर है, शिक्षक उन ध्वनियों के उच्चारण पर विशेष ध्यान दें और शुद्ध उच्चारण सिखाकर विद्यार्थियों की त्रुटियों को सुधारें। उदाहरण स्वरूप— ओड़िआ में ह्रस्व और दीर्घ ध्वनियों के उच्चारण में कोई अन्तर नहीं है, जब कि हिन्दी में यह अन्तर स्पष्ट है। हिन्दी में 'दिन' के उच्चारण में जितना समय लगता है 'दीन' के उच्चारण में उसका दुगुना समय लगता है। यह हिन्दी की विशेषता है। ओड़िआ में 'दिन' और 'दीन' के उच्चारण में समान-समान समय लगता है। हिन्दी में 'ऋ' का उच्चारण 'रि' की तरह होता है। ओड़िआ में इसका उच्चारण 'रु'की

COMPETITIVE BOOKS Board and NCERT All Books With Solutions CBS

तरह होता है। हिन्दी में 'ऐ' और 'औ' मूलस्वर हैं, जब कि ओड़िआ में संयुक्त-स्वर। हिन्दी में अकारान्त शब्दों का हल्-मात्रान्त शब्दों की तरह उच्चारण होता है, जब कि ओड़िआ में ऐसा नहीं होता । हिन्दी में सामान्य व्यवहार में 'श' और 'स' का उच्चारण होता है, जब कि ओड़िआ में केवल 'स' का उच्चारण होता है। इसी प्रकार हिन्दी और ओड़िआ में ब-व, ज-य, क्ष-ख्य, ल-ळ की उच्चारणगत भिन्नताओं के सम्बन्ध में विद्यार्थियों को परिचित कराना अपेक्षित है।

हिन्दी को तृतीय भाषा के रूप में पढ़नेवाले विद्यार्थियों के लिए प्रथम से चतुर्थ अध्याय तक पढ़ना आवश्यक है। अन्य विषयों को पढ़कर वे अपना ज्ञान बढ़ा सकते हैं। हिन्दी को द्वितीय भाषा के रूप में पढ़नेवाले विद्यार्थियों के लिए पूरी पुस्तक पढ़ना आवश्यक है। हिन्दी को प्रथम भाषा के रूप में पढ़नेवाले विद्यार्थी भी इस पुस्तक को संदर्भ-पुस्तक के रूप में पढ़ सकते हैं।

नियमों की जानकारी से नहीं, अपितु व्यवहार से ही भाषा सीखी जाती है। इसलिए शिक्षकों से अनुरोध है कि विद्यार्थियों के भाषा-व्यवहार के लिए वे पर्याप्त अवसर पैदा करें।

आशा है, यह पुस्तक शिक्षकों तथा विद्यार्थियों के लिए उपादेय सिद्ध होगी।

लेखक मण्डल

COMPETITIVE BOOKS
Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

विषय-सूची

		पृष्ठ
१.	वर्ण-परिचय	१-८
	(क) वर्णमाला	१
	(ख) मात्राएँ	२
	(ग) व्यंजनों के संयुक्त रूप	३
	(घ) 'र' से बननेवाले संयुक्त-व्यंजनों के रूप	५
	(ङ) अंक-परिचय	६
	(च) क्रमवाचक संख्याएँ	८
२.	शब्द-ज्ञान	९-५५
	विकारी और अविकारी शब्द	९
	(क) संज्ञा (लिंग, वचन, कारक)	१०
	(ख) सर्वनाम	२८
	(ग) विशेषण	३२

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

पृष्ठा

	(घ)	क्रिया	३७
	(ङ)	अव्यय	५०
३.	वाक्य		५६-६१
४.	विराम चिह्न		६२-६५
५.	(क)	सन्धि	६६
	(ख)	समास	७५
	(ग)	उपसर्ग और प्रत्यय	७९
	(घ)	अनेकार्थक शब्द	८५
	(ङ)	समानार्थक शब्द	८७
	(च)	विलोम शब्द	८९
	(छ)	प्रायः समान रूप से उच्चरित किन्तु भिन्नार्थक शब्द	९३
	(ज)	समूहवाची शब्द	९६
	(झ)	मुहावरे	९७
	(ञ)	कहावतें	१०१

COMPETITIVE BOOKS and NCERT All Books With Solutions OBS

१. वर्ण-परिचय

(क)

वर्णमाला

हिन्दी की वर्णमाला में दो प्रकार के वर्ण हैं - स्वर और व्यंजन।

स्वर वर्ण हैं – अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ऋ, ए, ऐ, ओ, औ

व्यंजन वर्ण हैं – क, ख, ग, घ, ङ

च, छ, ज, झ, ञ

ट, ठ, ड, ढ, ण   ड़, ढ़

त, थ, द, ध, न

प, फ, ब, भ, म

य, र, ल, व

श, ष, स, ह

संयुक्त व्यंजन हैं – क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

स्वरवर्णों में अ, इ, उ, ऋ के उच्चारण में कम समय लगता है। इन्हें ह्रस्व-स्वर कहते हैं। आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ के उच्चारण में अधिक समय लगता है। इन्हें दीर्घ-स्वर कहते हैं।

(ख)

मात्राएँ

'अ' को छोड़कर बाकी सभी स्वरों का व्यंजनों के साथ मात्रारूप में प्रयोग होता है। इसी प्रकार अनुस्वार, विसर्ग और चन्द्रबिन्दु का भी प्रयोग होता है; जैसे —

स्वरध्वनि	मात्रारूप	उदाहरण	स्वरध्वनि	मात्रारूप	उदाहरण
आ	ा	का			
इ	ि	कि	ओ	ो	को
ई	ी	की	औ	ौ	कौ
उ	ु	कु			
ऊ	ू	कू	अनुस्वार	ं	कं
ऋ	ृ	कृ	विसर्ग	:	क:
ए	े	के	चंद्रबिंदु	ँ	आँ, हाँ
ऐ	ै	कै			

'र' के साथ लेखन में 'ु' और 'ू' मात्रा का योग क्रमशः 'रु' और 'रू' के रूप में होता है। हिन्दी में 'ऋ' तथा उसकी मात्रा का उच्चारण 'रि' जैसा होता है।

COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT All Books With Solutions OBS

अभ्यास-१

१. अ, उ, इ - ये किस प्रकार के वर्ण हैं ?

२. ख, ज, ट, द, म, स, ह - ये किस प्रकार के वर्ण हैं ?

३. ह्रस्व-स्वर कौन-कौन से हैं ?

४. दीर्घ-स्वर कौन-कौन से हैं ?

५. हिन्दी वर्णमाला में संयुक्त व्यंजन कौन-कौन से हैं ?

६. निम्नलिखित ध्वनियों के मात्रारूप और उनके उदाहरण दीजिए—
ए, ऋ, उ, ऐ, औ।

(ग)

व्यंजनों के संयुक्त रूप

COMPETITIVE BOOKS Odisha Board and NCERT All Books With Solutions OBS

खड़ी पाईवाले व्यंजनों की खड़ी पाई हटाकर संयुक्त रूप बनाए जाते हैं जैसे —

ख्	+	य	=	ख्य – मुख्य			थ्	+	व	=	थ्व – पृथ्वी		
ग्	+	ण	=	ग्ण – रुग्ण			ध्	+	य	=	ध्य – ध्यान		
घ्	+	न	=	घ्न – विघ्न			न्	+	न	=	न्न – अन्न		
च्	+	च	=	च्च – कच्चा			प्	+	त	=	प्त – सप्त		
ज्	+	य	=	ज्य – राज्य			ब्	+	द	=	ब्द – शब्द		
ण्	+	ठ	=	ण्ठ – कण्ठ			भ्	+	य	=	भ्य – सभ्य		
त्	+	क	=	त्क – उत्कल			म्	+	म	=	म्म – सम्मान		

य्	+	य	=	य्य – शय्या	ष्	+	क	=	ष्क – पुष्कर
ल्	+	प	=	ल्प – अल्प	स्	+	त	=	स्त – अस्त
व्	+	य	=	व्य – व्यसन	क्ष्	+	य	=	क्ष्य – लक्ष्य
श्	+	च	=	श्च – पश्चात्					

हुकवाले व्यंजनों का हुक हटाकर संयुक्त रूप बनाए जाते हैं; जैसे –

क्	+	त	=	क्त – मुक्ति	फ्	+	त	=	फ्त – मुफ्त

बिना पाईवाले व्यंजनों में हल् चिह्न लगातर संयुक्त रूप बनाये जाते हैं। किन्तु कुछ व्यंजनों को हल् न लगाकर संयुक्त रूप में भी लिखने का प्रचलन है; जैसे—

वर्ण	संयुक्त-रूप	उदाहरण	प्रचलित संयुक्त रूप	उदाहरण
ङ्	ङ्म	वाङ्मय	ङ्म	वाङ्मय
छ्	छ्व	उच्छ्वास	–	-
ट्	ट्ट	लट्टू	ट्ट	लट्टू
ठ्	ठ्य	पाठ्य	ठ्य	पाठ्य
ड्	ड्ड	लड्डू	ड्ड	लड्डू
ढ्	ढ्य	धनाढ्य	ढ्य	धनाढ्य
द्	द्द	उद्देश्य	द्द	उद्देश्य
	द्ध	उद्धार	द्ध	उद्धार
	द्भ	उद्भव	द्भ	उद्भव
	द्म	पद्म	द्म	पद्म
	द्य	विद्या	द्य	विद्या
	द्व	द्वारा	द्व	द्वारा
ह	ह्म	ब्रह्म	ह्म	ब्रह्म

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ COMPETITIVE BOOKS Odisha Board and NCERT Books With Solution OBS

अभ्यास-२

१. खड़ी पाईवाले व्यंजनों से बने संयुक्त व्यंजन लगाकर दस शब्द बनाइए।

२. बिना पाईवाले व्यंजनों से बने संयुक्त व्यंजनों में हल् चिह्न लगाकर दस शब्द बनाइए।

(घ)

'र' से बननेवाले संयुक्त व्यंजनों के रूप

'र' से बननेवाले संयुक्त व्यंजनों के तीन रूप प्रचलित हैं —

- / प्र - प्रेम
- ^ ट्र - राष्ट्र
- ʿ र्व - पर्व

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

अभ्यास-३

१. सभी व्यंजनों के साथ 'र' जोड़कर संयुक्त रूपवाले शब्दों को लिखिए।

(ङ)

अंक-परिचय

अक्षरों में उनका उच्चारण तथा लेखन

हिन्दी की देवनागरी लिपि में अंकों को निम्न प्रकार से लिखा जाता है—

अंक	उच्चारण	अंक	उच्चारण	अंक	उच्चारण
१	एक	१८	अठारह	३५	पैंतीस
२	दो	१९	उन्नीस	३६	छत्तीस
३	तीन	२०	बीस	३७	सैंतीस
४	चार	२१	इक्कीस	३८	अड़तीस
५	पाँच	२२	बाईस	३९	उनतालीस
६	छह	२३	तेईस	४०	चालीस
७	सात	२४	चौबीस	४१	इकतालीस
८	आठ	२५	पच्चीस	४२	बयालीस
९	नौ	२६	छब्बीस	४३	तैंतालीस
१०	दस	२७	सत्ताईस	४४	चौवालीस
११	ग्यारह	२८	अठाईस	४५	पैंतालीस
१२	बारह	२९	उनतीस	४६	छियालीस
१३	तेरह	३०	तीस	४७	सैंतालीस
१४	चौदह	३१	इकतीस	४८	अड़तालीस
१५	पन्द्रह	३२	बत्तीस	४९	उनचास
१६	सोलह	३३	तैंतीस	५०	पचास
१७	सत्रह	३४	चौंतीस	५१	इक्यावन

COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

अंक	उच्चारण	अंक	उच्चारण	अंक	उच्चारण
५२	बावन	६८	अड़सठ	८४	चौरासी
५३	तिरपन	६९	उनहत्तर	८५	पचासी
५४	चौवन	७०	सत्तर	८६	छियासी
५५	पचपन	७१	इकहत्तर	८७	सतासी
५६	छप्पन	७२	बहत्तर	८८	अठासी
५७	सत्तावन	७३	तिहत्तर	८९	नवासी
५८	अट्ठावन	७४	चौहत्तर	९०	नब्बे
५९	उनसठ	७५	पचहत्तर	९१	इक्यानबे
६०	साठ	७६	छिहत्तर	९२	बानबे
६१	इकसठ	७७	सतहत्तर	९३	तिरानबे
६२	बासठ	७८	अठहत्तर	९४	चौरानबे
६३	तिरसठ	७९	उन्यासी	९५	पंचानबे
६४	चौंसठ	८०	अस्सी	९६	छियानबे
६५	पैंसठ	८१	इक्यासी	९७	सतानबे
६६	छियासठ	८२	बयासी	९८	अठानबे
६७	सड़सठ	८३	तिरासी	९९	निन्यानबे
				१००	सौ

१,००० - एकहजार, १,००,००० - एक लाख, १,००,००,००० - एक करोड़

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT All Books With Solutions OBS

(च)

क्रमवाचक संख्याएँ

१ से लेकर ६ तक की संख्याओं की क्रमवाचक संख्याएँ इस प्रकार हैं— पहला, दूसरा, तीसरा, चौथा, पाँचवाँ, छठा।

संख्या ७ से बाद की सभी संख्याओं के उच्चारणवाले रूप के साथ केवल 'वाँ' जोड़नेपर उन संख्याओं की क्रमवाचक संख्या बन जाती है। जैसे-सातवाँ, दसवाँ, अड़तीसवाँ, बहत्तरवाँ, निन्यानबेवाँ, सौवाँ आदि।

अभ्यास-४

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

१. निम्नलिखित अंकों के उच्चारणरूप अक्षरों में लिखिए—

१७, २८, ३९, ४७, ४९, ५२, ६३, ७३, ८०, ९३, ९९।

२. एक लाख को अंकों में लिखिए।

३. निम्नलिखित अंकों के क्रमवाचकरूप अक्षरों में लिखिए—

१०, १८, ३८, ४५, ५७, ६८, ७४, १००।

४. निम्नलिखित उच्चारणरूपों को अंकों में लिखिए—

एकहजार, तैंतालीस, उन्नीस, नवासी, उन्यासी।

●

२. शब्द-ज्ञान

लड़का, मैं, अच्छा, दौड़ेगा, और।

ये एक-एक शब्द हैं। **शब्द** एक या एक से अधिक ध्वनियों (वर्णों) का समूह होता है, जिससे कुछ-न-कुछ अर्थ निकलता है।

विकारी और अविकारी शब्द—

शब्द मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं – विकारी और अविकारी। जिन शब्दों के रूपों में परिवर्तन होता है, उन्हें विकारी शब्द कहते हैं। ये चार प्रकार के होते हैं — संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया।

LI1ZCI

संज्ञा शब्द; जैसे— लड़का, लड़के, लड़की

सर्वनाम शब्द; जैसे— मैं, मुझ, मेरा, मेरी

विशेषण शब्द; जैसे— अच्छा, अच्छे, अच्छी

क्रिया शब्द; जैसे— दौड़ता, दौड़े, दौड़, दौड़ी, दौड़ेगा

COMPETITIVE BOOKS
Board and NCERT
OBS

जिन शब्दों के रूपों में परिवर्तन नहीं होता, उन्हें अविकारी शब्द कहते हैं। इनका दूसरा नाम 'अव्यय' है; जैसे— और, किन्तु, भी, लेकिन, तेज, नहीं, हमेशा, बहुत, के बदले, वाह आदि।

अभ्यास-५

१. निम्नलिखित वाक्यों से विकारी और अविकारी (अव्यय) शब्दों को छाँटकर लिखिए—

क - सीता अच्छी लड़की है।

ख - मेरा नाम मोहन है।

ग - घोड़ा तेज दौड़ता है।

घ - तुम भी आओ।

ङ - गीता और सीता किताब पढ़ती हैं।

(क)

संज्ञा

भारत में अनेक दर्शनीय स्थान हैं।

कश्मीर की सुन्दरता भुलाई नहीं जाती।

यहाँ बड़ी-बड़ी झीलें हैं।

हमारा दल वहाँ गया था।

वहाँ बहुत फल मिलते हैं।

इन वाक्यों में 'भारत', 'सुन्दरता', 'झीलें', 'दल' और 'फल' क्रमशः देशविशेष, भावविशेष, स्थानविशेष, समूहविशेष, और पदार्थविशेष के नाम हैं। इन्हें संज्ञा कहते हैं।

जिस शब्द से किसी प्राणी, वस्तु, स्थान, देश या भाव विशेष के नाम का बोध होता है, उसे 'संज्ञा' कहते हैं। संज्ञाएँ पाँच प्रकार की होती हैं— व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, द्रव्यवाचक, समूहवाचक और भाववाचक।

COMPLETE BOOKS (Odisha Board and NCERT) All Books With Solutions OBS

१. **व्यक्तिवाचक संज्ञा** – जिस शब्द से व्यक्ति, पशु, पक्षी, वस्तु आदि के नाम का बोध होता है, उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—

व्यक्तियों के नाम	– मोहन, मंजु, इकबाल, एरिक
देशों के नाम	– भारत, अमेरिका, चीन, अफ्रीका
नदियों के नाम	– महानदी, गंगा, कावेरी, नर्मदा
दिनों, महीनों, पर्वों आदि के नाम	– सोमवार, कार्त्तिक, जनवरी, दशहरा, ईद, क्रिसमस

२. **जातिवाचक संज्ञा** – जिस शब्द से व्यक्ति, वृत्ति, पशु, पक्षी, वस्तु आदि की पूरी जाति का बोध होता है, उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे— व्यक्ति – लड़का, लड़की, युवक, औरत, मर्द

वृत्ति – शिक्षक, हलवाई, मन्त्री, बढ़ई

पशु-पक्षी – बाघ, भालू, हिरन, कोयल, कौवा

वस्तु – मकान, कुर्सी, घड़ी, पहाड़, नदी, जंगल

३. **द्रव्यवाचक संज्ञा** – जिस शब्द से किसी पदार्थ या द्रव्य का बोध होता है, उसे द्रव्यवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे— दूध, पानी, पेट्रोल, सोना, लोहा, कोयला, लकड़ी, कागज, चीनी, आटा, घास।

४. **समूहवाचक संज्ञा** – जिस शब्द से किसी समूह या समुदाय का बोध होता है, उसे समूहवाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे—

व्यक्तियों का समूह – सभा, परिवार, कक्षा, दल, गिरोह, संघ, वर्ग

वस्तुओं का समूह – गुच्छा, पुंज, ढेर

५. **भाववाचक संज्ञा**– जिस शब्द से व्यक्ति या वस्तु के गुण, धर्म, अवस्था, अथवा कार्यव्यापार का बोध होता है, उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं; जैसे— बचपन, साधुता, बुढ़ापा, शत्रुता, पण्डिताई, मूर्खता, वीरत्व, मिठास, चतुराई, चालाकी, गर्मी, चौड़ाई, लड़ाई, पूजा, दौड़, लिखावट, पढ़ाई, अपनापन, ममता, निकटता।

COMPETITIVE BOOKS
and NCERT
All Books With Solutions
ODS

अभ्यास-६

१. निम्नलिखित वाक्यों में से संज्ञा पदों को छाँटकर लिखिए—

क- कौवा काँव-काँव करता है।

ख - मेज पर पुस्तक है।

ग - कटक में बारबाटी किला है।

घ - भारत के उत्तर में हिमालय है।

ङ - प्रकृति की सुन्दरता मन को मोह लेती है।

(i) लिंग

बालक पढ़ता है।

घोड़ा दौड़ता है।

लड़की नाचती है।

परीक्षा चल रही है।

COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

इन वाक्यों में 'बालक' और 'घोड़ा' शब्द पुंलिंग हैं एवं 'लड़की' और 'परीक्षा' शब्द स्त्रीलिंग हैं।

संज्ञा के जिस रूप से उसके स्त्री अथवा पुरुष होने का बोध होता है, उसे लिंग कहते हैं।

हिन्दी में दो लिंग हैं — **पुंलिंग और स्त्रीलिंग**।

संज्ञा के जिस रूप से पुरुष जाति का बोध होता है, उसे पुंलिंग कहते हैं; जैसे— लड़का, कुत्ता, क़ौआ, राजा, पति आदि।

संज्ञा के जिस रूप से स्त्री जाति का बोध होता है, उसे स्त्रीलिंग कहते हैं; जैसे— लड़की, बिल्ली, कोयल, मक्खी आदि।

हिन्दी में अप्राणिवाचक संज्ञाएँ भी पुंलिंग या स्त्रीलिंग में होती हैं, जैसे—

पुंलिंग संज्ञाएँ :

१. **देशों, पहाड़ों और समुद्रों के नाम** – भारत, चीन, कोरिया, हिमालय, सतपुड़ा, अरबसागर, हिन्दमहासागर।

२. **समय के भागों, महीनों और दिनों के नाम** – वर्ष, सप्ताह, असाढ़, सावन, सोमवार, शुक्रवार।

३. **वृक्षों के नाम** – आम, वट, पीपल, चीड़, नीम, अशोक।
(अपवाद – इमली, सुपारी, नारंगी, मौलश्री)

४. **अनाजों के नाम** – गेहूँ, धान, उड़द, चावल, बाजरा, चना।
(अपवाद – मूँग, मसूर, मटर, कुल्थी, अरहर)

५. **द्रव पदार्थों के नाम** – घी, दूध, पानी, तेल, शरबत, इत्र।
(अपवाद – छाछ, लस्सी, चाय, कॉफी, स्याही)

६. **ग्रहों के नाम** – चन्द्र, रवि, मंगल, बुध, वृहस्पति, शुक्र, शनि।
(अपवाद – पृथ्वी)

७. **धातुओं के नाम** – सोना, काँसा, पीतल। (अपवाद – चाँदी)

८. **रत्नों के नाम** – हीरा, मोती, नीलम, मूँगा।

स्त्रीलिंग संज्ञाएँ :

१. **नदियों और झीलों के नाम** – गंगा, महानदी, ऋषिकुल्या, चिलका।

२. **तिथियों के नाम** – दूज, तीज, अमावास्या, पूर्णिमा।

३. **भाषाओं के नाम** – हिन्दी, ओड़िआ, संस्कृत, अंग्रेजी।

४. **भोजनों और मसालों के नाम** – रोटी, पूड़ी, खीर, खिचड़ी, जलेबी, इलायची। (अपवाद – लड्डू, हलुवा, बादाम)

हिन्दी में शब्दों का लिंग जान लेना जरूरी है। लिंग शब्दों के रूपों और प्रयोगों से स्पष्ट होता है।

लिंग-परिवर्तन के कुछ नियम

लिंग-परिवर्तन (पुंलिंग से स्त्रीलिंग) निम्नलिखित नियमों से होते हैं—

१. अकारान्त के 'अ' के स्थान पर 'ई' जोड़कर —

पुत्र - पुत्री	देव - देवी
हिरन - हिरनी	कबूतर - कबूतरी

२. कुछ अकारान्त शब्दों को आकारान्त करके —

तनुज - तनुजा	सुत - सुता
छात्र - छात्रा	अनुज - अनुजा
शिष्य - शिष्या	श्याम - श्यामा

३. कुछ शब्दों के अन्तिम 'अक' के स्थान पर 'इका' बनाकर —

पाठक - पाठिका	बालक - बालिका
लेखक - लेखिका	नायक - नायिका
सेवक - सेविका	गायक - गायिका

४. आकारान्त शब्दों में कभी 'ई' और कभी 'इया' जोड़कर —

घोड़ा - घोड़ी	कुत्ता - कुतिया
लड़का - लड़की	बुड्ढा - बुढ़िया
बच्चा - बच्ची	लोटा - लुटिया

५. व्यवसायबोधक या जातिवाचक या आकारान्त शब्दों में 'इन' जोड़कर —

लुहार - लुहारिन	पण्डा - पण्डाइन
कहार - कहारिन	साँप - साँपिन
बाघ - बाघिन	धोबी - धोबिन

६. 'वान' / 'मान' के स्थान पर 'वती' / 'मती' प्रत्यय लगाकर —

धनवान - धनवती	बुद्धिमान - बुद्धिमती
बलवान - बलवती	आयुष्मान - आयुष्मती
भाग्यवान - भाग्यवती	श्रीमान - श्रीमती

७. सम्बन्धवाचक संज्ञाओं के अन्त में 'आनी' जोड़कर —

सेठ - सेठानी	नौकर - नौकरानी
देवर - देवरानी	चौधरी - चौधरानी
जेठ - जेठानी	खत्री - खत्रानी

८. कई प्राणिवाचक संज्ञाओं के अन्त में 'नी' जोड़कर —

ऊँट - ऊँटनी	सिंह - सिंहनी
मोर - मोरनी	शेर - शेरनी
हाथी - हथिनी	स्यार - स्यारनी

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions

९. कुछ शब्दों के अंत में 'आइन' जोड़कर —

बाबू - बबुआइन	गुरु - गुरुआइन
पंडित - पंडिताइन	लाला -ललाइन

१०. कुछ पुंलिंग शब्दों के स्त्रीलिंग शब्द बिलकुल भिन्न शब्द होते हैं; जैसे —

पुत्र - कन्या, पुत्री, बहू	भाई - बहन, भाभी
बेटा - बेटी, बहू	राजा - रानी
वर - वधु	ससुर - सास
पुरुष - स्त्री	नर - मादा
पिता - माता	मर्द - औरत
बाप - माँ	बैल - गाय

कवि - कवयित्री　　　　विद्वान - विदुषी

युवा - युवती　　　　दाता - दात्री

अभ्यास - ७

१. पुंलिंग शब्द और स्त्रीलिंग शब्द से आप क्या समझते हैं ?

२. निम्नलिखित शब्दों में से पुंलिंग और स्त्रीलिंग शब्दों को अलग-अलग छाँटिए—

हिमालय, सोमवार, गंगा, महानदी, पूर्णिमा, चाँदी, हीरा, रोटी, ओड़िआ, हिन्दी, लड्डू, चिलका, पानी, चाय, पृथ्वी, खीर।

३. निम्नलिखित शब्दों के स्त्रीलिंग रूप लिखिए—

माली, काका, बालक, पिता, बेटा, पुरुष, राजा, भाई, पण्डित, देवर।

४. निम्नलिखित शब्दों के पुंलिंग रूप लिखिए—

बहन, माँ, देवी, स्त्री, सेठानी, श्रीमती, कुतिया, लेखिका, अनुजा, सास, बहू, हिरनी।

५. नीचे लिखे शब्दों को जोड़कर वाक्य बनाइए—

(i)	यह	घोड़ा	तेज	उठाता है।
				उठाती है।
	काला	हाथी	बोझ	दौड़ता है।
				दौड़ती है।
	काली	बाघ		
	सफेद	घोड़ी		
		हथिनी		
		बाघिन		

(ii)	उनकी हमारे उनके हमारी	माताजी पिताजी बकरियाँ बकरे लड़के लड़कियाँ	किताब घर घास खूब	पढ़ते हैं। आते हैं। चरते हैं। चरती हैं। आती हैं।

(ii) वचन

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

लड़का पढ़ता है। — लड़के पढ़ते हैं।

नदी बहती है। — नदियाँ बहती हैं।

बहन आती है। — बहनें आती हैं।

बाईं ओर के रेखांकित शब्द एक का बोध कराते हैं, जब कि दाहिनी ओर के रेखांकित शब्द एक से अधिक का बोध कराते हैं। अतः शब्द के जिस रूप से संख्या का बोध होता है, (एक या अनेक) उसे वचन कहते हैं।

हिन्दी में वचन दो प्रकार के हैं— 'एकवचन' तथा 'बहुवचन'। जो शब्द एक का बोध कराता है, उसे एकवचन कहते हैं; जैसे— लड़का, नदी, बहन। जो शब्द एक से अधिक का बोध कराता है, उसे बहुवचन कहते हैं; जैसे— लड़के, नदियाँ, बहनें।

एकवचन से बहुवचन बनाने के कुछ नियम

(क) पुंलिंग शब्द

१. अ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ से अन्त होनेवाले पुंलिंग शब्द दोनों वचनों में एक-से रहते हैं; जैसे—

नर - नर,	पुत्र - पुत्र,	मुनि - मुनि,
भाई - भाई,	पक्षी - पक्षी,	साधु - साधु,
डाकू - डाकू,	चौबे - चौबे,	फोटो - फोटो।

२. आकारान्त पुंलिंग संस्कृत के शब्द और रिश्तेसूचक शब्द दोनों वचनों में एक-से रहते हैं; जैसे —

देवता - देवता,	राजा - राजा,	योद्धा - योद्धा,
दादा - दादा,	चाचा - चाचा,	मामा - मामा।

३. आकारान्त पुंलिंग शब्द के अन्तवाले 'आ' के बदले 'ए' का प्रयोग करके बहुवचन बनाया जाता है; जैसे —

लड़का - लड़के,	बकरा - बकरे,	कमरा - कमरे,
बच्चा - बच्चे,	घोड़ा - घोड़े,	केला - केले।

(ख) स्त्रीलिंग शब्द

१. अकारान्त स्त्रीलिंग शब्द के अन्त में 'अ' के स्थान पर 'एँ' की मात्रा जोड़कर बहुवचन बनाया जाता है; जैसे —

बहन - बहनें,	पुस्तक - पुस्तकें,	कलम - कलमें,
बात - बातें,	गाय - गायें,	लाश - लाशें।

COMPETITIVE BOOKS
Board
NCERT
All Books With Solutions
OBS

२. आ, उ, औ-कारान्त स्त्रीलिंग शब्द के अन्त में 'एँ' जोड़कर बहुवचन बनाया जाता है; जैसे —

लता - लताएँ, माता - माताएँ, माला - मालाएँ,

धेनु - धेनुएँ, धातु - धातुएँ, गौ - गौएँ।

३. ऊकारान्त स्त्रीलिंग शब्द के 'ऊ' को ह्रस्व 'उ' करके और उसके बाद 'एँ' जोड़कर बहुवचन बनायाा जाता है; जैसे —

बहू - बहुएँ, झाड़ू- झाड़ुएँ, जूँ - जुँएँ।

४. इ / ई -कारान्त स्त्रीलिंग शब्द के अन्त में इ / ई के स्थान पर 'इयाँ' जोड़कर बहुवचन बनाया जाता है; जैसे—

रीति - रीतियाँ, नीति - नीतियाँ, तिथि - तिथियाँ,

नदी - नदियाँ, लड़की - लड़कियाँ, स्त्री - स्त्रियाँ।

५. जिन स्त्रीलिंग शब्दों के अन्त में 'या' हो, उनके 'या' के स्थान पर 'याँ' करके बहुवचन बनाया जाता है; जैसे —

बुढ़िया - बुढ़ियाँ, डिबिया - डिबियाँ, चिड़िया - चिड़ियाँ,

खटिया - खटियाँ, गुड़िया - गुड़ियाँ, लुटिया - लुटियाँ।

६. कई शब्द ऐसे हैं, जिनके अन्त में एक विशेष शब्द जोड़कर बहुवचन बनाया जाता है; जैसे —

मामा - मामालोग, शिक्षक - शिक्षकवृन्द, नेता - नेतागण,

लेखक- लेखकवर्ग, विद्वान - विद्वत्जन, भक्त - भक्तजन।

COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT All Books With Solutions OBS

अभ्यास - ८

१. निम्नलिखित वाक्यों में रेखांकित किए गए शब्दों के वचन बताइए—

क - तुम्हें कई उपहार मिले हैं।

ख - पथ में काँटे तो होंगे।

ग - सपने सब मिट गये।

घ - आकाश में काले बादल छा गये।

ङ - टेबल पर पुस्तक रखी है।

२. निम्नलिखित शब्दों में से एकवचन और बहुवचन शब्दों को अलग-अलग छाँटकर लिखिए —

चिड़ियाँ, तोता, मछली, टोली, गुच्छे, मुनि, कवि, राजा, नेता, औरत, फोटो, देवता, मालाएँ, लता।

३. निम्नलिखित शब्दों के वचन बदलिए —

बच्चा, मकान, कलम, नारियाँ, बिल्ली, साइकिल, पुस्तक, बहन, धातुएँ।

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
Odisha Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

(iii) कारक

'पिता ने पुत्र को अपनी जेब से दो रुपये दिए।'

इस वाक्य को देखने से पता चलता है कि —

पिता ने दिए। पुत्र को दिए। जेब से दिए। दो रुपये दिए। इस प्रकार 'दिए' क्रिया का सभी शब्दों से सम्बन्ध है। 'अपनी जेब' पदबन्ध में 'अपनी' का 'जेब' से सम्बन्ध है।

अतएव संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से वाक्य के अन्य शब्दों के साथ उसका सम्बन्ध निश्चित होता है, उसे कारक कहते हैं।

ऊपर के वाक्य में -ने, -को, -से कारक चिह्न हैं। इन्हें **विभक्ति** भी कहते हैं। संक्षेप में कारक और उनकी विभक्तियाँ निम्न प्रकार की हैं —

	कारक	विभक्ति-चिह्न
१.	कर्त्ता	ने, को, से ∅
२.	कर्म	को, से ∅
३.	करण	से, के द्वारा, के साथ
४.	संप्रदान	को, के लिए
५.	अपादान	से (दूरी या अलग होने के अर्थ में)
६.	सम्बन्ध	का, की, के। रा, री, रे। ना, नी, ने
७.	अधिकरण	में, पर
८.	सम्बोधन	हे, ओ, अरे, अजी, (शब्द के पहले लगते हैं।)

१. **कर्त्ता कारक** – क्रिया के करनेवाले को कर्त्ता कहते हैं; जैसे — राम ने खाया। यहाँ 'खाना' क्रिया का करनेवाला राम है। 'राम ने' कर्त्ताकारक में है। उसकी विभक्ति है — 'ने'। कर्त्ताकारक में कुछ स्थितियों में 'ने' का प्रयोग नहीं भी होता है; जैसे — राम खाता है।

२. **कर्म कारक** - जिस व्यक्ति या वस्तु पर कर्त्ता के क्रिया-व्यापार का फल पड़ता है, उसे कर्म कारक कहते हैं; जैसे — राम मोहन को मारता है। यहाँ कर्त्ता (राम) के क्रिया-व्यापार (मारना) का फल 'मोहन' पर पड़ता है। 'मोहन को' कर्म-कारक में है। निर्जीव के साथ कर्म-कारक में 'को' नहीं लगता; जैसे — राम रोटी खाता है। यहाँ रोटी कर्म कारक में है।

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT CBS

३. **करण कारक** - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया के साधन का बोध होता है, उसे करण कारक कहते हैं; जैसे — राम चाकू से फल काटता है। इस वाक्य में 'चाकू' काटने का साधन है। 'चाकू से' करण-कारक में है।

४. **सम्प्रदान कारक** - जिसके लिए कुछ किया जाता है या जिसे दिया जाता है, उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं; जैसे — राजू रोशन को दो रुपये देता है। पिताजी बेटी के लिए खिलौना लाये। पहले वाक्य में रुपये रोशन को दिये जाते हैं। अतः 'रोशन को' सम्प्रदान कारक में है। दूसरे वाक्य में खिलौना बेटी के लिए लाया जाता है। अतः 'बेटी के लिए' सम्प्रदान कारक में है।

५. **अपादान कारक** - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से किसी वस्तु के अलम होने का बोध होता है, उसे अपादान कारक कहते हैं; जैसे — पेड़ से पत्ता गिरा। इस वाक्य में 'पत्ता' के पेड़ से अलग होने का बोध होता है। अतः 'पेड़ से' अपादान कारक में है।

६. **सम्बन्ध कारक** - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध किसी दूसरी संज्ञा से ज्ञात होता है, उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं; जैसे — राम की बहन पढ़ती है। यहाँ राम का सम्बन्ध बहन से है। अतः 'राम की' सम्बन्ध कारक में है। इस कारक के विभक्ति-चिह्न या परसर्ग हैं— का, की, के; रा, री, रे; ना, नी, ने। इनका प्रयोग लिंग और वचन के द्वारा नियंत्रित होता है; जैसे —

क - पुंलिंग एकवचन में - का, रा, ना; जैसे— राम का भाई, मेरा नाम, अपना काम।

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

ख - पुंलिंग एकवचन में - जब परवर्त्ती संज्ञा या सर्वनाम शब्द परसर्गयुक्त हो तो — के, रे, ने का प्रयोग होता है; जैसे— राम के भाई का, मेरे नाम पर, अपने काम से।

ग - पुंलिंग बहुवचन में - के, रे, ने; जैसे— राम के दो भाई, मेरे लड़के, अपने छाते।

घ - स्त्रीलिंग एकवचन तथा बहुवचन में - की, री, नी; जैसे— राधा की नौकरानी, मेरी सहेली, अपनी बातें।

७. **अधिकरण कारक** - संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से क्रिया-व्यापार के आधार का बोध होता है, उसे अधिकरण कारक कहते हैं; जैसे — मेज पर कलम है। कलम में स्याही है। यहाँ क्रिया-व्यापारों के आधार मेज और कलम हैं। 'मेज पर' और 'कलम में' अधिकरण कारक में हैं।

८. **सम्बोधन कारक** - जिसे पुकारा जाता है या सम्बोधित किया जाता है, उसे सम्बोधन कारक कहते हैं; जैसे — मित्रो ! मेरी बात सुनो। हे लड़की ! इधर आओ। इन वाक्यों में 'मित्रो' ! और 'हे लड़की' ! सम्बोधन कारक में हैं।

विशेष

(क) 'ने' कर्त्ताकारक का चिह्न है। परन्तु इसका कर्त्ताकारक में सर्वत्र प्रयोग नहीं होता।

(i) अकर्मक क्रियाओं के कर्त्ता के साथ 'ने' नहीं लगता; जैसे— मोहन कटक गया।

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

(ii) सकर्मक क्रियाओं के कर्त्ता के साथ वर्तमान और भविष्यत् काल में 'ने' नहीं लगता; जैसे — मैं पानी पीता हूँ। कृष्ण रोटी खायेगा।

(iii) अपूर्णभूत तथा हेतुहेतुमद्भूत के प्रथमरूप के कर्त्ता के साथ 'ने' नहीं लगता; जैसे — वह पढ़ता था। वह पढ़ता तो...

(ख) सकर्मक क्रियाओं के साथ भूतकाल (सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत, संदिग्धभूत या हेतुहेतुमद्भूत के द्वितीयरूप) में कर्त्ता के साथ 'ने' लगता है; जैसे —

- मोहन ने राम को मारा। - सामान्यभूत
- मोहन ने राम को मारा है। - आसन्नभूत
- मोहन ने राम को मारा था। - पूर्णभूत
- मोहन ने राम को मारा होगा। - संदिग्धभूत
- मोहन ने राम को मारा होता तो वह सुधर गया होता। - हेतुहेतुमद्भूत द्वितीय रूप।

COMPETITIVE BOOKS Board and NCERT All Books With Solutions OBS

अभ्यास - ९

१. रेखांकित शब्दों के कारकों के नाम बताइए —

क. तुम भी ऊँचे उठ सकते हो।

ख. पेड़ से आवाज आई।

ग. मैं तुम्हें देखता हूँ।

घ. पिताजी घर पर ही पढ़ाते थे।

ङ. नरेन्द्र ने प्रथम स्थान प्राप्त किया।

च. अधिकारी ने सोहन की लौटाई हुई किताब देखी।

छ. उसके लिए कहीं भी जगह नहीं है।

ज. बचपन से ही वह बाढ़ देखता आया है।

झ. कटक से पुरी नब्बे किलोमीटर दूर है।

२. उपयुक्त विभक्ति चिह्नों से खाली स्थान भरिए —

क. मेज ________ पुस्तक है।

ख. माली काका ________ आवाज सुनाई दी।

ग. बच्चे पेड़ ________ नीचे कूद पड़े।

घ. माली ________ चैन की साँस ली।

ङ. इस बालक ________ नाम था नरेन्द्रनाथ।

च. वे कोलकाता के उच्च-न्यायालय ________ वकील थे।

छ. संगीत ________ भी उन्हें बहुत प्रेम था।

ज. अधिकारी ने नरेन्द्र ________ पूछ ही लिया।

झ. नरेन्द्र ________ गुरु रामकृष्ण परमहंस थे।

ञ. उन्होंने विदेशों ________ भ्रमण किया।

ट. मनुष्य ________ मानवता का पाठ सिखाना होगा।

३. कर्मकारक और सम्प्रदानकारक के 'को' में क्या अन्तर है ? पाँच उदाहरण देकर समझाइए।

४. करणकारक और अपादानकारक के 'से' में क्या अन्तर है ? पाँच उदाहरण देकर समझाइए।

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଆ Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

पुलिंग संज्ञाओं के विभक्ति सहित रूप

	कारक	अकारान्त		आकारान्त		इकारान्त		ईकारान्त		उकारान्त		ऊकारान्त	
		एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
१.	कर्त्ता	बालक बालक ने	बालक बालकों ने	लड़का लड़के ने	लड़के लड़कों ने	मुनि मुनि ने	मुनि मुनियों ने	आदमी आदमी ने	आदमी आदमीयों ने	साधु साधु ने	साधु साधुओं ने	भालू भालू ने	भालू भालूओं ने
२.	कर्म	बालक को	बालकों को	लड़के को	लड़कों को	मुनि को	मुनियों को	आदमी को	आदमीयों को	साधु को	साधुओं को	भालू को	भालूओं को
३.	करण	बालका से ,, के द्वारा	बालकों से ,, के द्वारा	लड़के से ,, के द्वारा	लड़कों से ,, के द्वारा	मुनि से ,, के द्वारा	मुनियों से ,, के द्वारा	आदमी से ,, के द्वारा	आदमीयों से ,, के द्वारा	साधु से ,, के द्वार	साधुओं से ,, के द्वारा	भालू से ,, के द्वारा	भालूओं से ,, के द्वारा
४.	सम्प्रदान	बालक को ,, के लिए	बालकों को ,, के लिए	लड़के को ,, के लिए	लड़कों को ,, के लिए	मुनि को ,, के लिए	मुनियों को ,, के लिए	आदमी को ,, के लिए	आदमीयों को ,, के लिए	साधु को ,, के लिए	साधुओं को ,, के लिए	भालू को ,, के लिए	भालूओं को ,, के लिए
५.	अपादान	बालक से	बालकों से	लड़के से	लड़कों से	मुनि से	मुनियों से	आदमी से	आदमीयों से	साधु से	साधुओं से	भालू से	भालूओं से
६.	संबंध	बालक का बालक की बालक के	बालकों का बालकों की बालकों के	लड़के का लड़के की लड़के के	लड़कों का लड़कों की लड़कों के	मुनि का मुनि की मुनि के	मुनियों का मुनियों की मुनियों के	आदमी का आदमी की आदमी के	आदमीयों का आदमीयों की आदमीयों के	साधु का साधु की साधु के	साधुओं का साधुओं की साधुओं के	भालू का भालू की भालू के	भालूओं का भालूओं की भालूओं के
७.	अधिकरण	बालक में बालक पर	बालकों में बालकों पर	लड़के में लड़के पर	लड़कों में लड़कों पर	मुनि में मुनि पर	मुनियों में मुनियों पर	आदमी में आदमी पर	आदमीयों में आदमीयों पर	साधु में साधु पर	साधुओं में साधुओं पर	भालू में भालू पर	भालूओं में भालूओं पर
८.	सम्बोधन	हे बालक !	हे बालको !	हे लड़क !	हे लड़को!	हे मुनि !	हे मुनियो !	हे आदमी !	हे आदमीयो !	हे साधु !	हे साधुओ !	हे भालु !	हे भालुओ !

स्त्रीलिंग संज्ञाओं के विभक्ति सहित रूप

	कारक	अकारान्त		आकारान्त		ईकारान्त		उकारान्त		ऊकारान्त		ओकारान्त	
		एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
१.	कर्त्ता	बहन बहन ने	बहनें बहनें ने	बालिका बालिका ने	बालिकाएँ बालिकाओं ने	लड़की लड़की के	लड़कीआँ लड़कीओं ने	धेनु धेनु ने	धेनुए धेनुओं ने	वहू वहू ने	वहूएँ वहूओं ने	गाँ गाँ ने	गाएँ गाँओं ने
२.	कर्म	बहन को	बहनों को	बालिका को	बालिकाओं को	लड़की को	लड़कीओं को	धेनु को	धेनुओं को	वहू को	वहूओं को	गाँ को	गाँओं को
३.	करण	बहन से बहन के द्वारा	बहनों से बहनों के द्वारा	बालिका से बालिका के द्वारा	बालिकाओं से बालिकाओं के द्वारा	लड़की से लड़की के द्वारा	लड़कीओं से लड़कीओं के द्वारा	धेनु से धेनु के द्वारा	धेनुओं से धेनुओं के द्वारा	वहू से वहू के द्वारा	वहूओं से वहूओं के द्वारा	गाँ से गाँ के द्वारा	गाँओं से गाँओं के द्वारा
४.	सम्प्रदान	बहन को बहन के द्वारा	बहनों को बहनों के द्वारा	बालिका को बालिका के द्वारा	बालिकाओं को बालिकाओं के द्वारा	लड़की को लड़की के द्वारा	लड़कीओं को लड़कीओं के द्वारा	धेनु को धेनु के द्वारा	धेनुओं को धेनुओं के द्वारा	वहू को वहू के द्वारा	वहूओं को वहूओं के द्वारा	गाँ को गाँ के द्वारा	गाँओं को गाँओं के द्वारा
५.	अपादान	बहन से	बहनों से	बालिका से	बालिकाओं से	लड़की से	लड़कीओं से	धेनु से	धेनुओं से	वहू से	वहूओं से	गाँ से	गाँओं से
६.	सम्बन्ध	बहन का बहन की बहन के	बहनों का बहनों की बहनों के	बालिका का बालिका की बालिका के	बालिकाओं का बालिकाओं की बालिकाओं के	लड़की का लड़की की लड़की के	लड़कीओं का लड़कीओं की लड़कीओं के	धेनु का धेनु की धेनु के	धेनुओं का धेनुओं की धेनुओं के	वहू का वहू की वहू के	वहूओं का वहूओं की वहूओं के	गाँ का गाँ की गाँ के	गाँओं का गाँओं की गाँओं के
७.	अधिकरण	बहन में बहन पर	बहनों में बहनों पर	बालिका में बालिका पर	बालिकाओं में बालिकाओं पर	लड़की में लड़की पर	लड़कीओं में लड़कीओं पर	धेनु में धेनु पर	धेनुओं में धेनुओं पर	वहू में वहू पर	वहूओं में वहूओं पर	गाँ में गाँ पर	गाँओं में गाँओं पर
८.	सम्बोधन	हे बहन !	हे बहनों !	हे बालिका !	हे बालिकाओं !	लड़की !	हे लड़कीओं !	हे धेनु !	हे धेनुओं !	हे वहू !	हे वहूओं !	हे गाँ !	हे गाँओं !

अभ्यास-१०

१. निम्नलिखित शब्दों के सभी कारकों में रूप लिखिए—

रात, बच्चा, अरि, लड़की, वस्तु, बहू।

(ख)

सर्वनाम

राम आ रहा है।

वह रोज स्कूल जाता है।

उसे सभी प्यार करते हैं।

प्रथम वाक्य में संज्ञा शब्द 'राम' आया है। दूसरे वाक्य में सज्ञा 'राम' के बदले 'वह' आया है। तीसरे वाक्य में संज्ञा 'राम' के बदले 'उसे' आया है। तीनों वाक्यों में यदि 'राम' शब्द का प्रयोग होता तो सुनने में अच्छा नहीं लगता।

अतएव संज्ञा शब्द के बदले, बाद के वाक्यों में जिन शब्दों का प्रयोग किया जाता है, उन्हें सर्वनाम कहते हैं।

सर्वनाम छह प्रकार के होते हैं — १. पुरुषवाचक, २. निश्चयवाचक, ३. अनिश्चयवाचक, ४. प्रश्नवाचक, ५. सम्बन्धवाचक और ६. निजवाचक।

१. **पुरुषवाचक सर्वनाम** – पुरुष (नर या नारी) के लिए प्रयुक्त होने के कारण इन्हें पुरुषवाचक सर्वनाम कहते हैं। कहनेवाले, सुननेवाले तथा किसी अन्य (तीसरे) के लिए प्रयोग होने के आधार पर ये तीन प्रकार के होते हैं —

   क. उत्तमपुरुष (कहनेवाला) - मैं, हम।

   ख. मध्यमपुरुष (सुननेवाला) - तू, तुम, आप।

   ग. अन्यपुरुष (अन्य या जिसके बारे में बात कही जाय)- वह, वे, यह, ये।

२. **निश्चयवाचक सर्वनाम**– जिस सर्वनाम से पास या दूर के किसी निश्चित व्यक्ति, प्राणी या वस्तु का बोध होता है, उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे— यह, ये, वह, वे।

- यह लड़का है । ये लड़के हैं । (निकटता का बोध)
- वह घर है । वे घर हैं । (दूरता का बोध)

३. **अनिश्चयवाचक सर्वनाम** – जिस सर्वनाम से किसी व्यक्ति, प्राणी या वस्तु का निश्चित रूप से बोध नहीं हो पाता, उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे– कोई, कुछ ।

- कोई आ रहा है । आँख में कुछ गिर गया है । (प्राणी के लिए)
- मेज पर कुछ रखा है । (वस्तु के लिए)

४. **प्रश्नवाचक सर्वनाम** – जिस सर्वनाम से किसी व्यक्ति, प्राणी या वस्तु के बारे में पूछा जाता है, उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे— कौन, क्या ।

- कौन पढ़ता है ? (प्राणी के लिए)
- तुम क्या पढ़ते हो ? (वस्तु के लिए)

'कौन-सा' का प्रयोग प्राणी और वस्तु दोनों के लिए होता है —

- कौन-सा लड़का पढ़ता है ? (प्राणी के लिए)
- तुम कौन-सी पुस्तक पढ़ते हो ? (वस्तु के लिए)

५. **सम्बन्धवाचक सर्वनाम** – जिस सर्वनाम से एक वस्तु का दूसरी वस्तु से पारस्परिक सम्बन्ध जाना जाता है, उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे— जो, सो, वह ।

- जो करेगा, सो भरेगा । - जो जागता है, वह पाता है ।
- जो बोएगा, सो(वह) काटेगा । - जिससे पूछो, वह दु:खी है ।

६. **निजवाचक सर्वनाम** - जिस सर्वनाम से स्वयं का बोध होता है, उसे निजवाचक सर्वनाम कहते हैं; जैसे— आप, आप ही, अपने आप, खुद, स्वयं ।

- मैं आप ही जाऊँगा । यह काम तुम आप कर लोगे ।
- वह आप ही बकता जा रहा है ।
- तुम पहले अपने आपको सुधारो ।
- तुम खुद जाओ । आप स्वयं यही चाहते थे ।

COMPETITIVE BOOKS
and NCERT
All Books With Solutions
OBS

सर्वनाम के विभक्ति सहित रूप

	कारक	मैं		तू		वह		यह		कौन		जो	
		एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
१.	कर्त्ता	मैं	हम	तू	तुम	वह	ये	यह	ये	कौन	कौन	जो	जो
		मैंने	हमने	तूने	तुमने	उसने	उन्होंने	इसने	इन्होंने	किसने	किन्होंने	जिसने	जिन्होंने
२.	कर्म	मुझे	हमें	तुझे	तुम्हें	उसे	उन्हें	इसे	इन्हें	किसे	किन्हें	जिसे	जिन्हें
		मुझको	हमको	तुझको	तुमको	उसको	उनको	इसको	इनको	किसको	किनको	जिसको	जिनको
३.	करण	मुझसे	हमसे	तुझसे	तुमसे	उससे	उनसे	इससे	इनसे	किससे	किनसे	जिससे	जिनसे
४.	सम्प्रदान	मुझे	हमें	तुझे	तुम्हें	उसे	उन्हें	इसे	इन्हें	किसे	किन्हें	जिसे	जिन्हें
		मुझको	हमको	तुझको	तुमको	उसको	उनको	इसको	इनको	किसको	किनको	जिसको	जिनको
		मेरे लिए	हमारे लिए	तेरे लिए	तुम्हारे लिए	उसके लिए	उनके लिए	इसके लिए	इनके लिए	किसके लिए	किनके लिए	जिसके लिए	जिनके लिए
५.	अपादान	मुझसे	हमसे	तुझसे	तुमसे	उससे	उनसे	इससे	इनसे	किससे	किनसे	जिससे	जिनसे
६.	सम्बन्ध	मेरा	हमारा	तेरा	तुम्हारा	उसका	उनका	इसका	इनका	किसका	किनका	जिसका	जिनका
		मेरी	हमारी	तेरी	तुम्हारी	उसकी	उनकी	इसकी	इनकी	किसकी	किनकी	जिसकी	जिनकी
		मेरे	हमारे	तेरे	तुम्हारे	उसके	उनके	इसके	इनके	किसके	किनके	जिसके	जिनके
७.	अधिकरण	मुझमें	हममें	तुझमें	तुममें	उसमें	उनमें	इसमें	इनमें	किसमें	किनमें	जिसमें	जिनमें
		मुझ पर	हम पर	तुझ पर	तुम पर	उस पर	उन पर	इस पर	इन पर	किस पर	किन पर	जिस पर	जिन पर

'आप' और 'आपलोग' के साथ विभक्ति–चिह्न जुड़ते समय मूल 'आप' शब्द में कोई परिवर्तन नहीं होता ।

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT All Books With Solutions OBS

अभ्यास-११

१. निम्नलिखित वाक्यों में से सर्वनाम पदों को छाँटिए—

क. तुम अपना काम करो। ख. मैं आपके साथ जाऊँगा।

ग. जो आयेगा, वह खाएगा। घ. कोई तुम्हें बुला रहा है।

ङ. कौन तुम्हें पहचानता है ? च. उन्होंने कुछ नहीं खाया है।

छ. वह अपने आप चला गया।

२. रेखांकित सर्वनामों के लिंग और वचन बताइए—

क. वह झूठ बोलती है।

ख. यह रोज कसरत करता है।

ग. वह क्यों चिल्लाता है ?

घ. वे बहुत अच्छी कहानियाँ लिखते हैं।

ङ. वह चिट्ठी लिखती है।

३. सही पुरुषवाचक सर्वनामों से रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

क. ----- कल क्यों नहीं आया ?

ख. ----- यहाँ खड़े क्यों हैं ?

ग. ----- तमाशा देखती है।

घ. ----- मैदान में खेलता हूँ।

ङ. ----- कौन-सा विषय पढ़ाते हैं ?

४. निम्नलिखित सर्वनामों में से उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष और अन्यपुरुषवाचक सर्वनामों को अलग-अलग कीजिए—

तुम, यह, वे, उसे, हम, उन्होंने, आप, मेरा, तू, ये।

COMPETITIVE BOOKS
Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

५. निम्नलिखित सर्वनामों के कर्म, करण, सम्प्रदान और अपादान कारकों के रूप लिखिए—

मैं, तू, वह, यह, कौन, जो।

६. कोष्ठकों में दिए हुए सर्वनामों के शुद्ध रूपों का प्रयोग करके वाक्यों को फिर से लिखिए —

क. (मैं) का नाम गोपाल है।

ख. (तू) को क्या चाहिए ?

ग. (हम) का देश भारत है।

घ. (तुम) का भाई पाठ पढ़ता है।

ङ. (वह) से कलम ले आओ।

च. (वे) को पहचानते हो ?

छ. (यह) से राम अच्छा है।

ज. (ये) में परिश्रम करने की ताकत है।

COMPETITIVE BOOKS and NCERT All Books With Solutions OBS

(ग)

विशेषण

सफेद चादर बिछा दो ।

पाँच छात्र आ रहे हैं।

कुछ फल लाओ।

दुबला घोड़ा दौड़ रहा है।

इन वाक्यों में रेखांकित शब्द हैं— सफेद, पाँच, कुछ, दुबला। इन शब्दों के बाद जो संज्ञाएँ आई हैं; वे हैं— चादर, छात्र, फल, घोड़ा।

'सफेद' शब्द चादर की विशेषता अर्थात् 'रंग' बताता है।

'पाँच' शब्द छात्रों की विशेषता अर्थात् 'संख्या' बताता है।

'कुछ' शब्द फल की विशेषता अर्थात् 'परिमाण' बताता है।

'दुबला' शब्द घोड़े की विशेषता अर्थात् 'अवस्था' बताता है।

व्याकरण में सफेद, पाँच, कुछ और दुबला जैसे शब्दों को विशेषण कहा जाता है।

जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता बताता है, उसे विशेषण कहते हैं।

विशेषण के चार भेद होते हैं —

१. **गुणवाचक विशेषण**

२. **संख्यावाचक विशेषण**

३. **परिमाणवाचक विशेषण**

५. **सार्वनामिक विशेषण**

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
With Solutions
OBS

१. **गुणवाचक विशेषण** – जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम का गुण-दोष, रूप-रंग, आकार-प्रकार, दशा-स्थिति-अवस्था, स्वभाव, स्थान और काल आदि बताता है, उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं; जैसे —

- गुण-दोष - अच्छा, भला, बुरा, पवित्र, मीठा, चतुर, मजबूत।
- रूप-रंग - मैला, लाल, सुनहरा, सफेद, हरा, पीला।
- आकार-प्रकार - चौकोर, लम्बा, चौड़ा, गोल।

- दशा-स्थिति-

अवस्था - दुबला, रोगी, मोटा, कमजोर, गीला, गरीब, गाढ़ा।

- स्वभाव - दयालु, आलसी, कायर, शांत, पालतू।

- स्थान - क्षेत्रीय, भीतरी, पहाड़ी, पूर्वी, ग्रामीण, कटकी।

- काल - आधुनिक, पुराना, अगला, बासी, ताजा, नया।

२. **संख्यावाचक विशेषण** – जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम की संख्या बताता है, उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं। यह संख्या कभी निश्चित होती है और कभी अनिश्चित।

क - **निश्चित संख्यावाचक विशेषण** – इससे निश्चित संख्या का बोध होता है; जैसे —

- पूर्ण संख्यावाचक - एक, दो, तीन, सौ, हजार, लाख, करोड़।

- अपूर्ण संख्यावाचक - पाव, आधा, पौन, सवा।

- क्रमवाचक - पहला, दूसरा, पाँचवाँ, ग्यारहवाँ, इकतीसवाँ, सौवाँ।

- आवृत्तिवाचक - दुगुना, चौगुना, दुहरा, तिहरा, दुगुने, दुगुनी।

- समुदायवाचक - दोनों, चारों, दसों, पच्चीसों।

ख - **अनिश्चित संख्यावाचक विशेषण** – इससे निश्चित संख्या का बोध नहीं हो पाता; जैसे —

कुछ फल, कई छात्र, अनेक लोग, सारी बातें, बहुत संतरे, सभी प्राणी, चन्द लोग, दस-बीस आदमी, लगभग सभी मनुष्य।

COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

३. **परिमाणवाचक विशेषण** – जो विशेषण संज्ञा या सर्वनाम का परिमाण (माप-तौल) बताता है, उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। यह परिमाण कभी निश्चित होता है और कभी अनिश्चित।

क - **निश्चित परिमाणवाचक विशेषण** – इससे निश्चित परिमाण या मात्रा का बोध होता है; जैसे — एक किलो चीनी, पाँच लिटर दूध, दो मीटर कपड़ा, लोटा भर पानी, पाव भर आटा।

ख - **अनिश्चित परिमाणवाचक विशेषण**– इससे निश्चित परिमाण या मात्रा का बोध नहीं हो पाता; जैसे - अधिक पानी, थोड़ी सी चीनी, जरा-सी बात, कुछ दूध, सारे पंखे, ज्यादा आमदनी।

४. **सार्वनामिक विशेषण** – जो विशेषण सर्वनाम से बनता है, उसे सार्वनामिक विशेषण कहते हैं। यह किसी संज्ञा की विशेषता बतलाता है; जैसे — वह किताब, उस किताब में, वे लड़के, उन लड़कों का, यह बात, इस बात में, ये कलमें, इन कलमों से, कोई लड़का, ऐसा सदस्य, कौन आदमी, कौन-सी लड़की, कैसी चीज, जो आदमी, जिस लड़के ने, मेरी दुकान, आपकी बेटी।

COMPETITIVE BOOKS Board and NCERT All Solutions OBS

अभ्यास - १२

१. नीचे के वाक्यों में से विशेषण पदों को छाँटकर बताइए —

क - यह काला घोड़ा है।

ख - कच्चा आम हरा होता है।

ग - अच्छा लड़का खेल रहा है।

घ - पके आमों को खाना चाहिए।

ङ - यह गाय काली है।

च - भारत में अनेक दर्शनीय स्थान हैं।

छ - चिलका खारे पानी की झील है।

२. रिक्त स्थानों को उचित विशेषणों से भरिए —

क - यह ________ फूल है।

ख - वह मेरे पास ________ दिन आया।

ग - उनके घर में ________ गाय है।

घ - आपने क्या ________ बच्चे को देखा ?

ङ - मेरे घर के पास एक ________ बरगद का पेड़ है।

३. विशेषण कितने प्रकार के होते हैं ? उनके नाम बताइए और तीन-तीन उदाहरण दीजिए।

४. निम्नलिखित विशेषणों को पहचानिए और उनके प्रकारों के नाम लिखिए—

मीठा, पुराना, पहला, कुछ, बहुत, पांच, ज्यादा, कौन, कटकी, थोड़ा, लम्बा।

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଆ Board and NCERT All Books With Solutions OBS

५. 'क' स्तम्भ के विशेषणों के साथ 'ख' स्तम्भ के विशेष्यों (संज्ञाओं) को मिलाकर लिखिए —

'क' स्तम्भ (विशेषण)	'ख' स्तम्भ (विशेष्य)
छोटे	प्रतिभा
तीव्र	शक्ति
उच्च	पौधा
नन्हा	बुद्धि
अनोखी	आंखें
अलसायी	विचार
अलौकिक	बच्चे

(घ)

क्रिया

गोपाल पढ़ रहा है।

सीता ने गीत गाया।

सूरज पूरब में उगता है।

इन वाक्यों में 'पढ़ रहा है', 'गाया' और 'उगता है' — कार्य के होने की सूचना देते हैं। **जिस शब्द से किसी काम के होने या करने का बोध होता है, उसे क्रिया कहते हैं।** लिखना, पढ़ना, उठना, बैठना, खाना, पीना, आदि अनेक क्रियाएँ हैं।

क्रिया के मूलरूप को 'धातु' कहते हैं। एक धातु के व्यवहार से अनेक रूप बन जाते हैं; जैसे — धातु है 'लिख'। इसके लिखना, लिखता, लिखी, लिखा, लिखे, लिखेगा, लिखूँगा जैसे रूप बनते हैं। इसी प्रकार अन्य कुछ धातुएँ हैं—

पढ़, उठ, खा, पी, पा, खेल आदि।

धातुओं के साथ '-ना' जोड़कर क्रिया के सामान्य रूप बनाये जाते हैं; जैसे — पढ़ना, उठना, खाना, पीना, पाना, खेलना आदि।

क्रिया के भेद – अर्थ के आधार पर क्रिया के दो भेद होते हैं — सकर्मक और अकर्मक।

क - **सकर्मक क्रिया :** राम फल खाता है।

सीता गीत गाती है।

गोपाल दूध पीता है।

इन वाक्यों में फल, गीत और दूध कर्म हैं और उनसे सम्बन्धित क्रियाए सकर्मक हैं। जिस क्रिया के साथ कर्म का रहना आवश्यक हो, उसे सकर्मक क्रिया

कहते हैं। पढ़ना, लिखना, देखना, सुनना, खाना, पीना, गाना, बजाना आदि सकर्मक क्रियाएँ हैं।

ख - **अकर्मक क्रिया :** लड़का हँसता है।

यह दौड़ता है।

सीता सोयी है।

इन वाक्यों में हँसना, दौड़ना और सोना क्रियाओं का कोई कर्म नहीं है। जब क्रिया के लिए कर्म की आवश्यकता न हो, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। उठना, बैठना, आना, जाना, चलना, दौड़ना, रोना, जागना आदि अकर्मक क्रियाएँ हैं।

क्रिया के रूप – संज्ञा और सर्वनाम की भाँति क्रिया के मूलरूप में परिवर्तन होता चलता है। कर्त्ता के लिंग, वचन, पुरुष और काल के कारण क्रिया के रूप में तदनुरूप परिवर्तन होता है; जैसे —

- लिंग के कारण परिवर्तन - राम खेलता है। (पुलिंग)

सीता खेलती है। (स्त्रीलिंग)

- वचन के कारण परिवर्तन - लड़की खेलती है। (एकवचन)

लड़कियाँ खेलती हैं। (बहुवचन)

- पुरुष के कारण परिवर्तन -

मैं खेलता हूँ। हम खेलते हैं। (उत्तम पुरुष)

तू खेलता है। तुम खेलते हो। (मध्यम पुरुष)

वह खेलता है। वे खेलते हैं। (अन्य पुरुष)

क्रिया के काल – क्रिया में काल प्रमुख है। इससे क्रिया के करने के समय का बोध होता है; जैसे —

राम खाता है। राम खायेगा। राम ने खाया।

इन वाक्यों में कर्त्ता 'राम' के द्वारा खाने की क्रिया विभिन्न समयों में होने की सूचना मिलती है। इसके कारण ही क्रिया के रूप में भिन्नता आयी है। क्रिया के इस रूपान्तर को काल कहते हैं। इससे क्रिया के व्यापार, उसकी पूर्णता, अपूर्णता, भविष्य में होने आदि का बोध होता है। इस प्रकार काल के तीन भेद होते हैं — वर्तमानकाल, भूतकाल और भविष्यत्काल।

१. **वर्तमानकाल –**

क - राम लिखता है। ख - हरि जा रहा है। ग - गोपाल रोता हो।
घ - गोपाल रोता होगा।

इन वाक्यों से वर्तमान समय में क्रिया का होना सूचित होता है। क्रिया के इस रूप को वर्तमानकाल कहते हैं। वर्तमानकाल के चार भेद होते हैं— सामान्य वर्तमान, अपूर्ण वर्तमान, संभाव्य वर्तमान और संदिग्ध वर्तमान।

ऊपर दिये गए प्रथम वाक्य में साधारण रूप से क्रिया का होना प्रकट होता है, इसे सामान्य वर्तमानकाल कहते हैं। द्वितीय वाक्य में वर्तमानकाल में क्रिया की असमाप्ति का बोध होता है, इसे अपूर्ण वर्तमानकाल कहते हैं। तीसरे वाक्य में वर्तमानकाल में क्रिया के होने की संभावना अधिक रहती है, इसे संभाव्य वर्तमान काल कहते है। चौथे वाक्य में सन्देह पाया जाता है, इसे संदिग्ध वर्तमानकाल कहते हैं।

वर्तमानकाल की रूपावली इस प्रकार है —

पुरुष	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
		(क) सामान्य वर्तमान		
उत्तम	मैं पढ़ता हूँ।	हम पढ़ते हैं।	मैं पढ़ती हूँ।	हम पढ़ती हैं।
मध्यम	तू पढ़ता है।	तुम पढ़ते हो।	तू पढ़ती है।	तुम पढ़ती हो।
		आप पढ़ते हैं।		आप पढ़ती हैं।
अन्य	वह पढ़ता है।	वे पढ़ते हैं।	वह पढ़ती है।	वे पढ़ती हैं।

पुरुष	पुलिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
(ख) अपूर्ण वर्तमान (तात्कालिक वर्तमान)				
उत्तम	मैं पढ़ रहा हूँ।	हम पढ़ रहे हैं।	मैं पढ़ रही हूँ।	हम पढ़ रही हैं।
मध्यम	तू पढ़ रहा है।	तुम पढ़ रहे हो। आप पढ़ रहे हैं।	तू पढ़ रही है।	तुम पढ़ रही हो। आप पढ़ रही हैं।
अन्य	वह पढ़ रहा है।	वे पढ़ रहे हैं।	वह पढ़ रही है।	वे पढ़ रही हैं।
(ग) संभाव्य वर्तमान				
उत्तम	मैं पढ़ता होऊँ।	हम पढ़ते हों।	मैं पढ़ती होऊँ।	हम पढ़ती हों।
मध्यम	तू पढ़ता हो।	तुम पढ़ते हो। आप पढ़ते हों।	तू पढ़ती हो।	तुम पढ़ती हो। आप पढ़ती हों।
अन्य	वह पढ़ता हो।	वे पढ़ते हों।	वह पढ़ती हो।	वे पढ़ती हों।
(घ) संदिग्ध वर्तमान				
उत्तम	मैं पढ़ता हूँगा।	हम पढ़ते होंगे।	मैं पढ़ती हूँगी।	हम पढ़ती होंगी।
मध्यम	तू पढ़ता होगा।	तुम पढ़ते होगे। आप पढ़ते होंगे।	तू पढ़ती होगी।	तुम पढ़ती होगी। आप पढ़ती होंगी।
अन्य	वह पढ़ता होगा।	वे पढ़ते होंगे।	वह पढ़ती होगी।	वे पढ़ती होंगी।

COMPETITIVE BOOKS
Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

२. **भूतकाल –** क - मैंने पत्र लिखा।

ख - राम कटक गया।

ग - वह फल खा रहा था।

इन वाक्यों से बीते हुए समय में क्रिया का होना सूचित होता है। क्रिया के इस रूप को भूतकाल कहते हैं। भूतकाल के छह भेद हैं — सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत, अपूर्णभूत, संदिग्धभूत और हेतुहेतुमद्‌भूत।

(क) सामान्य भूत

क्रिया के जिस रूप से भूत काल की सामान्यता का बोध हो, उसे सामान्य भूत कहते हैं। इसकी रूपावली इस प्रकार है—

पुरुष	पुंलिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उत्तम	मैं गया।	हम गये।	मैं गयी	हम गयीं।
मध्यम	तू गया।	तुम गये। आप गये।	तू गयी।	तुम गयी। आप गयीं।
अन्य	वह गया।	वे गये	वह गयी।	वे गयीं।

उपर्युक्त रूपावली से यह स्पष्ट है कि क्रिया अकर्मक हो तो सामान्य भूतकाल में वह कर्त्ता के अनुसार होती है। क्रिया सकर्मक होने पर कर्त्ता में 'ने' विभक्ति चिह्न लगता है और क्रिया का रूप पुंलिंग एकवचन में होता है; जैसे— मैंने खाया। हमने खाया। तूने खाया। तुमने खाया। किन्तु वाक्य में कर्म हो तो कर्म के लिंग और वचन के अनुसार क्रिया का रूप बदलता है; जैसे—

COMPETITIVE BOOKS
Board and NCERT
OBS

पुंलिंग		स्त्रीलिंग	
एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
मैंने केला खाया।	मैंने केले खाये।	मैंने रोटी खायी।	मैंने रोटियाँ खायीं।

(ख) आसन्न भूत

क्रिया के जिस रूप से क्रिया के व्यापार की आसन्न समाप्ति की सूचना मिलती है, उसे आसन्न भूतकाल कहते हैं। इसकी रूपावली इस प्रकार है —

पुरुष	पुंलिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
उत्तम	मैं गया हूँ।	हम गये हैं।	मैं गयी हूँ।	हम गयी हैं।
मध्यम	तू गया है।	तुम गये हो।	तू गयी है।	तुम गयी हो।
		आप गये हैं।		आप गयी हैं।
अन्य	वह गया है।	वे गये हैं।	वह गयी है।	वे गयी हैं।

सकर्मक क्रिया के सामान्य भूत के रूपों में वचन के अनुसार 'है' और 'हैं' जोड़कर आसन्न भूतकाल के रूप बनाये जाते हैं; जैसे—

मैंने केला खाया है।

मैंने केले खाये हैं।

(ग) पूर्ण भूत

जिससे क्रिया-व्यापार के पूर्ण रूप से समाप्त होने का बोध हो, उसे पूर्ण भूत कहते हैं। क्रिया के सामान्य भूतकाल के रूपों में लिंग और वचन के आधार पर 'था, थे, थी, थीं' लगाकर पूर्णभूत के रूप बनाये जाते हैं; जैसे—

	पुंलिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
अकर्मक	मैं गया था।	हम गये थे।	मैं गयी थी।	हम गयी थीं।
सकर्मक	मैंने केला खाया था।	मैंने केले खाये थे।	मैंने रोटी खायी थी।	मैंने रोटियाँ खायी थीं।

COMPETITIVE BOOKS

(घ) अपूर्ण भूत

क्रिया के जिस रूप से भूतकाल में क्रिया के समाप्त न होने का बोध हो, उसे अपूर्ण भूतकाल कहते हैं। अपूर्ण भूत के दो मुख्य रूप होते हैं; जैसे--

	पुंलिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
अकर्मक	मैं जा रहा था।	हम जा रहे थे।	मैं जा रही थी।	हम जा रही थीं।
	मैं जाता था।	हम जाते थे।	मैं जाती थी।	हम जाती थीं।
सकर्मक	मैं पढ़ रहा था।	हम पढ़ रहे थे।	मैं पढ़ रही थी।	हम पढ़ रही थीं।
	मैं पढ़ता था।	हम पढ़ते थे।	मैं पढ़ती थी।	हम पढ़ती थीं।

(ङ) संदिग्ध भूत

भूत काल की क्रिया के जिस रूप से कार्य के होने में सन्देह हो, उसे संदिग्ध भूतकाल कहते हैं; जैसे--

अकर्मक	मैं गया हूँगा।	हम गये होंगे।	मैं गयी हूँगी।	हम गयी होंगी।
सकर्मक	मैंने केला खाया होगा।	हमने केले खाये होंगे।	मैंने रोटी खायी होगी।	हमने रोटियाँ खायी होंगी।

(च) हेतुहेतुमद्भूत

क्रिया के जिस रूप से पता चलता है कि भूतकाल में क्रिया होनेवाली थी, पर किसी कारण न हो सकी, उसे हेतुहेतुमद्भूत काल कहते हैं। इसके दो रूप होते हैं; जैसे--

COMPETITIVE BOOKS
Board and NCERT
All Books With Solutions

	पुंलिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
प्रथमरूप	मैं पढ़ता तो उत्तीर्ण हो जाता।	हम पढ़ते तो उत्तीर्ण हो जाते।	मैं पढ़ती तो उत्तीर्ण हो जाती।	हम पढ़तीं तो उत्तीर्ण हो जातीं।
द्वितीयरूप	मैंने पढ़ा होता तो (मैं) उत्तीर्ण हो गया होता।	हमने पढ़ा होता तो (हम) उत्तीर्ण हो गये होते।	मैंने पढ़ा होता तो (मैं) उत्तीर्ण हो गयी होती।	हमने पढ़ा होता तो (हम) उत्तीर्ण हो गयी होतीं।

३. **भविष्यत्काल** क - मैं हँसूँगा।
ख - राम पढ़ेगा।
ग - सीता नाचेगी।

इन वाक्यों में, आनेवाले समय में क्रिया का होना सूचित होता है। क्रिया के इस रूप को भविष्यत् काल कहते हैं। भविष्यत् काल के तीन भेद हैं - सामान्य भविष्यत्, संभाव्य भविष्यत् और हेतुहेतुमद् भविष्यत्।

सामान्य भविष्यत् की रूपावली इस प्रकार है -

पुरुष	पुंलिंग		स्त्रीलिंग	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
	(क) सामान्य भविष्यत्			
उत्तम	मैं पढ़ूँगा।	हम पढ़ेंगे।	मैं पढ़ूँगी।	हम पढ़ेंगी।
मध्यम	तू पढ़ेगा।	तुम पढ़ोगे। आप पढ़ेंगे।	तू पढ़ेगी।	तुम पढ़ोगी। आप पढ़ेंगी।
अन्य	वह पढ़ेगा।	वे पढ़ेंगे।	वह पढ़ेगी।	वे पढ़ेंगी।
	(ख) संभाव्य भविष्यत्			
उत्तम	मैं पढ़ूँ तू पढ़े वह पढ़े	हम पढ़ें तुम पढ़ो आप पढ़ें वे पढ़ें		

हेतुहेतुमद् भविष्यत् को रूपावली संभाव्य भविष्यत् की रूपावली को तरह है।

संयुक्त क्रिया

लड़का सो गया है ।

लड़की ने खा लिया है ।

रेमश पढ़ चुका है ।

इन वाक्यों में दो-दो क्रियाएँ आयी हैं । उनमें से एक मुख्य क्रिया है और दूसरी उसकी सहायक क्रिया है । मुख्य क्रिया और सहायक क्रिया के मेल से संयुक्त क्रिया बनती है ।

चाहना, पाना, रहना, चुकना, सकना, लेना, लगना उठना, पड़ना, देना, जाना, होना आदि ऐसी सहायक क्रियाएँ हैं ।

इनके कुछ उदाहरण दिये जाते हैं —

क.	मैं जानना चाहता हूँ ।	वह जाना चाहता है ।
ख.	मैं यह कार्य नहीं कर पाऊँगा ।	यह कार्य उससे हो नहीं पायेगा ।
ग.	हरि घर जाता रहेगा ।	मधु पढ़ता रहा ।
घ.	अजय काम कर चुका है ।	निरंजन सो चुका है ।
ङ.	राम यह कार्य कर सकेगा ।	रमा से पढ़ाई हो सकेगी ।
च.	रहीम ने हमसे रुपया छीन लिया ।	तुमने हमें लूट लिया ।
छ.	साइकिल चलने लगी ।	सुशीला पढ़ने लगी ।
ज.	बच्चा चौंक उठा ।	मुर्दा जी उठा ।
झ.	पिताजी को ऐसा लिखना पड़ा ।	मुझे ऐसा करना पड़ा ।
ञ.	उसे जाने दो ।	मुझे ऐसा करने दीजिए ।
ट.	पौधा बढ़ता जाता है ।	पानी आता जा रहा है ।
ठ.	तुम्हें पाठ पढ़ लेना था ।	सबको सुबह उठ जाना है ।

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT Books With Solution OBS

प्रेरणार्थक क्रिया

(क) राम सोता है।

(ख) माँ खाती है।

(ग) राम बच्चे को सुलाता है।

(घ) माँ बच्चे को खिलाती है।

(क) और (ख) वाक्यों में सोने और खाने का काम क्रमश: राम और माँ करते हैं। किन्तु (ग) और (घ) वाक्यों में बच्चे को सोने के लिए या खाने के लिए क्रमश: राम और माँ प्रेरणा देते हैं।

इसलिए 'सोना' और 'खाना' मूल क्रियाएँ हैं तथा 'सुलाना' और 'खिलाना' प्रेरणार्थक क्रियाएँ हैं।

प्रेरणार्थक क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं। जिस क्रिया में कर्त्ता स्वयं भाग लेता है और दूसरे को कार्य करने के लिए भी प्रेरणा देता है वह प्रथम प्रकार की प्रेरणार्थक क्रिया है। जिस क्रिया में स्वयं भाग न लेकर कर्त्ता किसी अन्य के द्वारा कार्य कराता है वह द्वितीय प्रकार की प्रेरणार्थक क्रिया है; जैसे—

प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया के उदाहरण ऊपर के (ग) और (घ) वाक्य हैं।

द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया के उदाहरण नीचे दिए गये वाक्य हैं—

- राम बच्चे को नोकर से सुलवाता है।
- माँ बच्चे को नौकरानी से खिलवाती है।

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
Odisha Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

मूल धातु-रूप, प्रथम प्रेरणार्थक क्रिया और द्वितीय प्रेरणार्थक क्रिया के कुछ उदाहरण नीचे दिए जा रहे हैं—

मूल धातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक	मूल धातु	प्रथम प्रेरणार्थक	द्वितीय प्रेरणार्थक
कर	कराना	करवाना	दौड़	दौड़ाना	दौड़वाना
चल	चलाना	चलवाना	कह	कहलाना	कहलवाना
सुन सो	सुनाना सुलाना	सुनवाना सुलवाना	बैठ	बिठाना/ बिठलाना	बिठवाना/ बिठलवाना
गिर	गिराना	गिरवाना	खा	खिलाना	खिलवाना
पी	पिलाना	पिलवाना	सीख	सिखाना	सिखवाना
झुक	झुकाना	झुकवाना	भाग	भगाना	भगवाना

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

अभ्यास-१३

१. रिक्त स्थानों में उचित क्रियापद भरिए —

क. गाय दूध _______ है।

ख. हम दूध _______ हैं।

ग. हम गाय को _______ हैं।

घ. शिक्षक पाठ _______ हैं।

ङ. किसान खेत में बीज _______ है।

च. बच्चे _______ हैं।

छ. हरि रोज फुटबॉल _______ है।

ज. राम रात को नौ बजे _______ है।

२. निम्नलिखित क्रियाओं के मूल धातुरूप बताइए —

बैठना, पढ़ना, उठना, आना, करना, दौड़ना, चलना ।

३. निम्नलिखित वाक्यों के क्रियापदों को रेखांकित कीजिए —

क. हमेशा सच बोलो ।

ख. लड़का पढ़ता है ।

ग. तुम कब आओगे ?

घ. वे पाठ लिखते हैं ।

ङ. हम फल खाते हैं ।

४. नीचे के वाक्यों में से सकर्मक और अकर्मक क्रियाओं को छाँटिए —

नन्हा पौधा सोया था । नरेन्द्र माँ की हर बात सुनते थे । अधिकारी ने नरेन्द्र से पूछा । लोग यहाँ आते हैं । फूल खिलता है । जन्मदिन पर तुम्हें उपहार मिलते हैं ।

COMPETITIVE BOOKS
Board and NCERT
All Books With Solutions
CBS

५. निम्नलिखित वाक्यों में आई हुई क्रियाओं के काल बताइए—

क. तुम कब आओगे ?

ख. राम पुस्तक पढ़ रहा था ।

ग. तुम यहाँ कब आये थे ?

घ. रमा पुरी गयी ।

ङ. आप कटक गये थे ।

च. बालक लिख रहा था ।

छ. सीता पुरी जाती है ।

ज. हम घूमने जायेंगे ।

झ. लड़की पढ़ रही है ।

ञ. गाय घास खा रही थी ।

६. कोष्ठकों में दिए गये धातुओं के सही रूपों से वाक्यों के रिक्त स्थान भरिए—

क. वे दूध _______ हैं। (पी)

ख. वह कहाँ _______ है ? (जा)

ग. मेरी बहन गीत _______ है। (गा)

घ. मेरे पिताजी गाँव से _______ हैं। (आ)

ङ. आप पत्र _______ हैं। (लिख)

७. इन वाक्यों को भूतकाल में बदलिए—

क. वे फल खरीदेंगे।

ख. पिताजी हमारे लिए कपड़े लायेंगे।

ग. मैं आज ही उनसे मिलूँगा।

घ. मेरे साथ मेरी बहन भी आयेगी।

ङ मैं तुम्हें हिन्दी पढ़ाऊँगा।

८. संयुक्त क्रिया से आप क्या समझते हैं ? कुछ उदाहरण देकर बताइए।

९. निम्नलिखित क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप लिखिए —

पीना, खाना, घूमना, नाचना, रोना, चलना, देखना, जीना, हँसना, खोलना।

१०. निम्नलिखित वाक्यों में मुख्य-क्रियाओं और सहायक-क्रियाओं को छाँटिए—

क. वह लिखता रहता है।

ख. गाड़ी चल चुकी है।

ग. राम खेल सकता है।

घ. रमेश सवाल पूछने लगा।

ङ. किसान को खेत में हल चलाना है।

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

(ङ)

अव्यय

सीता तेज दौड़ रही थी।

वह मेरे सामने गिर पड़ी।

राम और श्याम ने उसे उठाया।

आह ! बेचारी रो रही है।

उसे धीरे-धीरे दौड़ना चाहिए था।

इन वाक्यों में 'तेज, सामने, और, आह !, धीरे-धीरे' जैसे शब्दों के रूप पुरुष, वचन, लिंग, कारक आदि के कारण कभी नहीं बदलते। अतः ऐसे शब्दों को अव्यय कहते हैं।

COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT OBS

अव्यय के मुख्य रूप से चार भेद होते हैं—

१. क्रियाविशेषण अव्यय २. सम्बन्धसूचक अव्यय

३. समुच्चयबोधक अव्यय ४. विस्मयादिबोधक अव्यय

१. क्रियाविशेषण अव्यय —

'सीता तेज दौड़ रही थी'— वाक्य में 'तेज' शब्द क्रियाविशेषण है, जो 'दौड़ रही थी' क्रिया की विशेषता बतला रहा है। जो अव्यय क्रिया की विशेषता बतलाते हैं, उन्हें 'क्रियाविशेषण अव्यय' कहते हैं।

क्रियाविशेषण क्रिया के काल, स्थान, रीति और परिमाण बताते हैं। स्वीकारवाचक, निश्चयवाचक, अनिश्चयवाचक, अवधारणात्मक और निषेधवाचक क्रियाविशेषण भी होते हैं।

(क) **कालवाचक क्रियाविशेषण –**

जैसे —वह हमेशा खुश रहता है। राम शीघ्र लौट आयेगा।

मैं कल पुरी जाऊँगा। तुम बार-बार पढ़ो।

उसे लगातार दिल का दौरा पड़ रहा है।

इसी प्रकार आज, आजकल, परसों, पहले, सर्वदा, सुबह, तुरंत, निरन्तर आदि भी अन्य कालवाचक क्रियाविशेषण अव्यय हैं।

(ख) **स्थान और दिशावाचक क्रियाविशेषण –**

जैसे —राम भीतर गया है। तुम्हारे पीछे कौन खड़ा है ?

वह मेरे सामने गिर पड़ी। राम यहाँ था।

इसी प्रकार निकट, पास, सर्वत्र, बाहर, वहाँ, ऊपर, नीचे, इधर, उधर, दाएँ, बाएँ, आगे, किधर, उधर, आदि भी अन्य स्थान और दिशावाचक क्रियाविशेषण अव्यय हैं।

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE
BOOKS
ଓଡ଼ିଆ Board
and NCERT
All Books With Solutions
OBS

(ग) **रीतिवाचक क्रियाविशेषण –**

क्रिया की रीति बतानेवाले अव्यय इस प्रकार के क्रियाविशेषण हैं; जैसे—

हाथी धीरे-धीरे आ रहा है। राम झटपट निकल पड़ा।

उसे अनायास लाभ मिल गया। मकान ऐसे बनेगा।

विनयपूर्वक बोलना चाहिए।

इसी प्रकार यों ही, तीव्र, तेज, सहज, जैसे-तैसे, चुपके-चुपके आदि भी अन्य रीतिवाचक क्रिया विशेषण हैं।

(घ) **परिमाणवाचक क्रियाविशेषण —**

क्रिया के परिमाण बतानेवाले अव्यय इस प्रकार के क्रियाविशेषण हैं; जैसे—

राम बहुत खेलता है। जरा शान्त रहो।

ज्यादा हँसना अच्छा नहीं है। वह इतना दौड़ता है कि थक जाता है।

इसी प्रकार उतना, जितना, कितना, थोड़ा, अति, पर्याप्त, केवल, लगभग आदि भी अन्य परिमाणवाचक क्रियाविशेषण हैं।

(ङ) **अन्य प्रकार के क्रियाविशेषण —**

- स्वीकारवाचक - हाँ, मैंने किया है।
- निश्चयवाचक - वह अवश्य आयेगा।
  सीता जरूर जायेगी।
- अनिश्चयवाचक - शायद तुम कल जाओगे।
  यथा संभव इसे कर लेना चाहिए।
- अवधारणात्मक - मैंने भी फल खाया।
- निषेधवाचक - हिन्दी में तीन निषेधवाचक अव्यय हैं— न, नहीं, मत।

ପ୍ରଥମ ପ୍ରକାଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

निषेध के अर्थ में 'न' का प्रयोग होता है; जैसे—

- वह न आए।
- उससे काम न हुआ होगा।
- काम करते जाओ, चिंता न करना।

दो या दो से अधिक के निषेध के लिए भी 'न' का प्रयोग होता है—

- उसने न खाया, न पिया और न बात ही की।

निषेध की निश्चितता के अर्थ में 'नहीं' का प्रयोग होता है; जैसे—

- इस वर्ष मैंने आम नहीं खाया।
- वह नहीं आया।

आदेश के अर्थ में 'मत' का प्रयोग होता है; जैसे—

- तुम मत खाओ।
- तू इधर मत आ।

२. सम्बन्धसूचक अव्यय –

माँ के बिना बच्चा रो रहा है।

गोपाल के साथ हरि आ रहा है।

सीता के बदले गीता जायेगी।

इन वाक्यों में 'के बिना', 'के साथ', 'के बदले' शब्द क्रमशः बच्चे के साथ माँ का, गोपाल के साथ हरि का, और गीता के साथ सीता का सम्बन्ध सूचित करते हैं। अतः जिस अव्यय से किसी संज्ञा या सर्वनाम शब्द का सम्बन्ध किसी अन्य शब्द से सूचित होता है, उसे सम्बन्ध-सूचक अव्यय कहते हैं; जैसे—

(के-) पहले, बाद, ऊपर, नीचे, आगे, पीछे, सामने, पास, निकट, बीच, जरिए, कारण, समान, साथ, सहित, सिवाय, योग्य, प्रतिकूल, आसपास आदि।

३. समुच्चयबोधक अव्यय —

राम और श्याम खेल रहे हैं।

मैं कटक या पुरी जाऊँगा।

परिश्रम करो, ताकि जीवन सफल बन सके।

मैंने कहा कि राम अच्छा लड़का है।

इन वाक्यों में 'और', 'या', 'ताकि', 'कि' जैसे अव्यय दो पदों या दो वाक्यों को परस्पर जोड़ते हैं अथवा अलग करते हैं। जो अव्यय शब्दों या वाक्यों को जोड़ते हैं अथवा अलग करते हैं, उन्हें समुच्चयबोधक अव्यय कहते हैं। ऐसे अव्यय निम्न प्रकार के होते हैं —

(क) संयोजक - और, एवं, व, तथा।

(ख) वियोजक - या, अथवा, वा, किंवा, चाहे-चाहे, न कि, क्या-क्या, नहीं तो।

(ग) विरोधदर्शक - किन्तु, परन्तु, मगर, लेकिन, पर, बल्कि, वरन्।

(घ) परिणामदर्शक - इसलिए, अतएव, सो, अत:

(ङ) उद्देश्यवाचक - कि, ताकि, जिससे।

(च) संकेतसूचक - यदि, अगर ... तो, यद्यपि...तथापि।

(छ) स्वरूपदर्शक - कि, जैसे, मानो।

४. विस्मयादिबोधक अव्यय —

आह ! बेचारी रो रही है। छिः ! यह मुझे पसन्द नहीं।

वाह ! यह कितना सुन्दर है ! अरे ! तुम वही हो !

इन वाक्यों में 'आह, छिः, वाह, अरे' आदि विविध मनोभावों को व्यक्त करते हैं; जैसे— शोक, घृणा, हर्ष, प्रशंसा या विस्मय आदि। जो इस प्रकार के मनोभावों को व्यक्त करते हैं उन्हें विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं। अर्थ की दृष्टि से ये अव्यय निम्न प्रकार के हो सकते हैं —

(क) विस्मयसूचक - अरे, क्या, सच, ऐ, है !

(ख) हर्षसूचक - वाह, आह, शाबाश, धन्य, जय !

(ग) शोकसूचक - आह, ओह, हा, हाय, बाप रे !

(घ) स्वीकारसूचक - ठीक, अच्छा, हाँ-हाँ !

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT All Books With Solutions OBS

(ङ) तिरस्कारसूचक - छिः, धिक्, धत्, दुर्, हट !

(च) अनुमोदनसूचक - हाँ-हाँ, ठीक-ठीक, अच्छा !

(छ) आशीर्वादसूचक - जय हो, जियो !

(ज) सम्बोधनसूचक - हे, रे, अरी, अजी, री !

अभ्यास-१४

१. निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाविशेषणों को पहचानिए—

क. वह पहले पहुँचा।

ख. उसने धीरे से कहा।

ग. वह अच्छा गाती है।

घ. मैं बिलकुल ही नहीं डरता।

ङ. वह कितना रोता है ?

२. अव्यय के कितने प्रकार होते हैं, नाम लिखिए।

३. नीचे लिखे वाक्यों में से अव्ययों को छाँटिए—

क. पेड़ के नीचे बकरी खड़ी है।

ख. मैं भी पढ़ूँगा।

ग. हरि और श्याम मेरे पास आये हैं।

घ. गाँव के निकट नदी बहती है।

ङ. पेड़ के ऊपर तोता उड़ रहा है।

च. हाँ, वह अवश्य आयेगा।

४. न, नहीं और मत के प्रयोगों में क्या-क्या अन्तर हैं ? उदाहरण देकर समझाइए।

५. नीचे लिखे अव्ययों की सहायता से एक-एक वाक्य बनाइए —

परन्तु, तथापि, और, अगर, बाप रे, छिः छिः, धीरे-धीरे, शायद, बहुत।

३. वाक्य

LIAVE6

राम पढ़ता है ।

हरि घोड़े पर बैठकर आ रहा है ।

आज बाजार बन्द है ।

इन शब्द-समूहों को देखने से पता चलता है कि प्रत्येक शब्द-समूह में कोई-न-कोई बात कही गयी है । वह बात पूरी तरह समझ में भी आ जाती है । इस प्रकार के शब्द-समूह को वाक्य कहते हैं ।

किसी वाक्य के दो मुख्य अंग होते हैं — उद्देश्य और विधेय । जिसके विषय में कुछ कहा जाता है, उसे 'उद्देश्य' कहते हैं । उपर्युक्त वाक्यों में 'राम', 'हरि', 'बाजार' उद्देश्य हैं । उद्देश्य के बारे में जो कुछ भी कहा जाय उसे 'विधेय' कहते हैं । उपर्युक्त वाक्यों में 'पढ़ता है', 'घोड़े पर बैठकर आ रहा है', 'आज बन्द है' विधेय हैं ।

COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT All Books With Solutions OBS

वाक्य के अंग :

किसी भी वाक्य में **एक कर्त्ता** अवश्य होता है । कुछ शब्द कभी-कभी कर्त्ता को विस्तार प्रदान करते हैं; जैसे— काले घोड़े, खरीदनेवाले लड़के । **कर्त्ता और उसके विस्तार को 'उद्देश्य' कहते हैं ।**

किसी भी वाक्य में **क्रिया** अवश्य होती है । कुछ शब्द कभी-कभी क्रिया को विस्तार देते हैं; जैसे — धीरे-धीरे चलना है, तेज बोलती है ।

वाक्य में कर्त्ता और क्रिया के अलावा **'कर्म'** और **'पूरक'** तथा कर्म के विस्तार और पूरक के विस्तार भी हो सकते हैं ।

क्रिया और उसके विस्तार, कर्म और पूरक एवं उनके विस्तार को 'विधेय' कहते हैं ।

- किसी भी वाक्य में उद्देश्य की रचना संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण और क्रिया से बनी संज्ञा के रूप में होती है; जैसे —

- **कुत्ता** खाता है ।	संज्ञा
- **तुम** आते हो । **मैं** लाया ।	सर्वनाम
- **अमीरों** ने दान दिया ।	विशेषण संज्ञावत्
- **टहलना** अच्छा है ।	क्रिया से बनी संज्ञा

- किसी भी वाक्य में विधेय की रचना निम्न प्रकार से होती है —

- कुत्ता **खाता है** ।	क्रिया से
- कुत्ता **रोटी खाता है** ।	कर्म और क्रिया से
- कुत्ता **छोटी रोटी** खाता है ।	कर्म, उसके विस्तार और क्रिया से
- राम बड़ा **कमजोर हैं** ।	पूरक और क्रिया से
- वह तेज **दौड़ता है** ।	क्रिया के विस्तार और क्रिया से

COMPETITIVE BOOKS
and NCERT
All Books With Solutions

वाक्य के भेद :

रचना की दृष्टि से वाक्य के तीन प्रकार हैं — सरल वाक्य, मिश्र वाक्य और संयुक्त वाक्य ।

१. सरल-वाक्य

जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय होता है, उसे सरल-वाक्य कहते हैं; जैसे —

राम लिखता है ।

बिजली चमकती है ।

हरि ने देखा ।

२. मिश्र-वाक्य

जिस वाक्य में एक सरल वाक्य के साथ उसके अधीन कोई दूसरा उपवाक्य हो, उसे मिश्र-वाक्य कहते हैं; जैसे —

राम कहता है कि मैं आज कोरापुट जाऊँगा ।

कौन नहीं जानता कि हमारी संस्कृति सत्य पर आधारित है ।

जो सोता है, वह खोता है ।

३. संयुक्त-वाक्य

जिस वाक्य में दो या दो से अधिक सरल-वाक्यों अथवा मिश्र वाक्यों का मेल होता है, उसे संयुक्त-वाक्य कहते हैं; जैसे —

मैं आगे बढ़ गया और वह पीछे रह गया । (दो सरल वाक्य)

आप आये और बहार आयी । (दो सरल वाक्य)

मैं कोलकाता गया था और वहाँ से पुस्तक लाया था । (दो सरल वाक्य)

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE
BOOKS
(ଓଡ଼ିଆ Board
and NCERT
All Subject Solutions
OBS

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के प्रकार :

अर्थ की दृष्टि से वाक्य के आठ प्रकार होते हैं— विधानात्मक, निषेधात्मक, प्रश्नवाचक, आज्ञार्थक, सन्देहात्मक, इच्छात्मक, विस्मयार्थबोधक और संकेतवाचक ।

१. **विधानात्मक** (विधिवाचक) — जिससे किसी कार्य के होने की सूचना मिले, उसे विधानात्मक वाक्य कहते हैं; जैसे —

बच्चे खेल रहे हैं ।   आकाश में बादल घुमड रहे हैं ।

हमने खाना खाया ।   वे गये ।

२. **निषेधात्मक** (निषेधवाचक) — जिससे किसी कार्य के न होने का बोध हो, उसे निषेधात्मक वाक्य कहते हैं; जैसे —

लड़का नहीं पढ़ता था। आकाश में बादल नहीं है।

राम न आए। वे नहीं गये। तुम मत जाओ।

३. **प्रश्नवाचक** — जिससे किसी प्रकार के प्रश्न किये जाने का बोध हो, उसे प्रश्नवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे —

तुंम्हारा नाम क्या है ? राम कहाँ जा रहा है ?

तुमने क्या खाया ? वे कहाँ चले गये ?

४. **आज्ञार्थक** (आज्ञावाचक) – जिससे किसी तरह की आज्ञा, आदेश, प्रार्थना या उपदेश आदि का बोध हो, उसे आज्ञार्थक वाक्य कहते हैं; जैसे —

COMPETITIVE BOOKS
(ओड़िशा) Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

तुम जाओ। मुझ पर कृपा करो। अच्छी तरह पढ़ाई करो।

कृपया आप चले जाइए। तुम्हें यह काम करना चाहिए।

५. **सन्देहात्मक** (सन्देहवाचक) – जिससे किसी बात की संभावना, शंका, सन्देह आदि का बोध हो, उसे सन्देहात्मक वाक्य कहते हैं; जैसे—

वह मालकानगिरि पहुँच गया होगा।

आज वर्षा हुई होगी। क्या तुम सचमुच ही गये थे ?

शायद कार्य नहीं हुआ। राम आया होगा।

६. **इच्छात्मक** (इच्छावाचक) – जिससे किसी प्रकार की इच्छा, कामना, शुभकामना, आशीर्वाद आदि का बोध हो; उसे इच्छात्मक वाक्य कहते हैं; जैसे —

दीर्घायु होओ। भगवान तुम्हारा कल्याण करें।

भारतमाता की जय हो। खूब फूलो फलो।

७. **विस्मयादिबोधक** (विस्मयवाचक) – जिससे विस्मय, हर्ष, शोक आदि का भाव प्रकट हो, उसे विस्मयार्थबोधक वाक्य कहते हैं; जैसे —

हाय राम ! तुम मुझे छोड़कर कहाँ जा रहे हो !

अहा ! आज बादल रिमझिम बरस रहे हैं !

यह बगीचा कितना सुन्दर है !

अरे ! वह आया है !

हैं ! तुम फेल हो गये !

८. **संकेतवाचक** – जिससे संकेत या शर्त का बोध हो, उसे संकेतवाचक वाक्य कहते हैं; जैसे —

पानी बरसता तो पौधे न सूखते।

तुम खाओ तो मैं जाऊँ।

वह आएगा तो मैं जाऊँगा।

अभ्यास - १५

१. निम्नलिखित उद्देश्यों के साथ विधेय जोड़कर वाक्यों को पूरा कीजिए —

क - कुत्ते ....

ख - टहलना ....

ग - मेरी माताजी ने ....

२. निम्नलिखित विधेयों के पहले उद्देश्य जोड़कर वाक्यों को पूरा कीजिए —

क - .... बड़ों का आदर करते हैं।

ख - .... गरम-गरम चाय पीनी चाहिए।

ग - .... बहुत से सुन्दर-सुन्दर मन्दिरों के लिए प्रसिद्ध है।

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT All Books With Solutions OBS

३. सरल वाक्य किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाइए।

४. मिश्र वाक्य किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाइए।

५. संयुक्त वाक्य किसे कहते हैं ? उदाहरण देकर समझाइए।

६. अर्थ की दृष्टि से वाक्य के कितने प्रकार होते हैं ? उनके नाम लिखिए और प्रत्येक का उदाहरण दीजिए।

७. निम्नलिखित वाक्य किस प्रकार के हैं, पहचानिए और उनके नाम लिखिए —

क - अहा ! दृश्य कितना सुन्दर है !

ख - शायद वह कल आया होगा।

ग - चलो, घूमने चलें।

घ - तुम स्कूल जाओ।

ङ - हमें मन लगाकर पढ़ना चाहिए।

च - क्या तुमने खाना खाया ?

छ - जाओ, बाजार से सब्जी लाओ।

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଆ Board and NCERT All Books With Solutions OBS

८. निर्देशानुसार निम्नलिखित वाक्यों को बदलिए —

क -	हमने खाना खाया।	(निषेधात्मक वाक्य में)
ख -	राम रोज पढ़ता है।	(प्रश्नात्मक वाक्य में)
ग -	वे गये।	(विस्मयार्थबोधक वाक्य में)
घ -	सबको जाना चाहिए।	(निषेधात्मक वाक्य में)
ङ -	वह अच्छा आदमी नहीं है।	(विधानात्मक वाक्य में)
च -	अरे ! वह आया है !	(प्रश्नात्मक वाक्य में)

४. विराम-चिह्न

लिखने में विराम को दिखलाने के लिए कई प्रकार के चिह्नों का प्रयोग होता है । इनके कारण भाषा में स्पष्टता आती है तथा अर्थ को समझने में सहायता मिलती है; जैसे —

रोको मत, जाने दो ।

रोको, मत जाने दो ।

पहले वाक्य में न रोकने और जाने देने के लिए कहा गया है । दूसरे वाक्य में रोकने और न जाने देने के लिए कहा गया है । इस प्रकार विराम का स्थान बदल जाने से वाक्य के अर्थ में परिवर्तन हो गया है ।

साधारणत: निम्नप्रकार के विराम-चिह्न प्रयोग में आते हैं —

१.	पूर्ण विराम	।
२.	अल्प विराम	,
३.	अर्द्ध विराम	;
४.	प्रश्नसूचक चिह्न	?
५.	विस्मयादिबोधक चिह्न	!
६.	उद्धरण चिह्न	‘...’ “...”
७.	संक्षेप चिह्न	.
८.	कोष्ठक	( )
९.	योजक चिह्न	-
१०.	निर्देशक चिह्न	—
११.	विवरण चिह्न	:—

इनका प्रयोग किन-किन परिस्थितियों में होता है, उनका विवरण इस प्रकार है :—

१. **पूर्ण विराम** - जहाँ किसी बात के कहने का अभिप्राय व्याकरणिक दृष्टि से पूरा हो गया हो वहाँ पूर्ण विराम लगता है। प्रश्न तथा विस्मयादिबोधक वाक्यों को छोड़कर यह चिह्न अन्य प्रकार के वाक्यों के अन्त में लगता है; जैसे— नदी बहती है।

२. **अल्प विराम** - जब एक प्रकार के बहुत से शब्द या उपवाक्य एक वाक्य के भीतर आएँ, तो प्रत्येक के बीच में अल्प विराम का चिह्न लगता है; जैसे — राम, लक्ष्मण और सीता वन में गये।

३. **अर्द्ध विराम** - जहाँ अल्प विराम की अपेक्षा अधिक ठहरना पड़े या दो से अधिक उपवाक्यों को जोड़ना पड़े या दो प्रकार की बातों को अलग-अलग दिखाना पड़े, वहाँ अर्द्धविराम का चिह्न लगता है; जैसे— वह कभी हँसती है; कभी रोती है।

४. **प्रश्नसूचक** - जहाँ प्रश्न पूछा गया हो, वहाँ प्रश्नसूचक चिह्न लगता है; जैसे — तुम कौन हो ?

५. **विस्मयादिबोधक** - हर्ष, शोक, आश्चर्य, घृणा, सम्बोधन आदि का भाव व्यक्त करने के लिए यह चिह्न लगता है; जैसे— वाह ! तुम धन्य हो !

COMPETITIVE BOOKS
All Books With Solutions
OBS

६. **उद्धरण चिह्न** - जब किसी पुस्तक, व्यक्ति, पत्र आदि का नाम कहा जाय तब ' ' चिह्न और जब किसी दूसरे के कथन को ज्यों-का-त्यों कहा जाय तब " " चिह्न लगता है; जैसे — माताजी ने कहा, "तुम्हें रोज 'गीता' पढ़नी है।"

७. **संक्षेप चिह्न** - यह चिह्न किसी शब्द के संक्षिप्त रूप के साथ लगता है; जैसे — डॉक्टर के लिए डॉ.।

८. **कोष्ठक** - किसी बात को स्पष्ट करने के लिए या किसी बात का दूसरा अर्थ बताने के लिए इसका प्रयोग होता है; जैसे — 'अच्छा' का विलोम (विपरीतार्थक) 'बुरा' है।

COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT All Books With Solutions OBS

९. **योजक चिह्न** - सामासिक शब्द या पुनरुक्त शब्दों के बीच इसका प्रयोग होता है; जैसे — माता-पिता, धीरे-धीरे।

१०. **निर्देशक चिह्न** - इसका प्रयोग विवरण देने अथवा एक विचार के बीच दूसरा विचार देने के लिए होता है; जैसे — हम दो चीजें चाहते हैं— सुख और शान्ति।

११. **विवरण चिह्न** - किसी विवरण को प्रस्तुत करने से पूर्व और उसके लिए भूमिका-कथन के उपरान्त यह चिह्न लगाया जाता है; जैसे — नीचे यह दिया जा रहा है :—

अभ्यास-१६

१. निम्नलिखित विराम चिह्नों के नाम लिखिए —

. , ; :— ? ! " " ।

२. संक्षेप चिह्न, प्रश्नसूचक चिह्न, पूर्ण विराम और अल्प विराम चिह्नों के प्रयोगों को समझाकर लिखिए।

३. यथास्थान उचित विराम चिह्नों का प्रयोग कीजिए —

क - अहा कितना सुन्दर दृश्य है

ख - उसे रोको मत जाने दो (रोकने और न जाने देने के अर्थ में)

ग - तुम कहाँ रहते हो

घ - राम श्याम मोहन और हरि कल मेला देखने गये थे

ङ - गांधीजी ने कहा था करो या मरो

च - क्या तुमने पढ़ना लिखना छोड़ दिया

छ - समाज एक दैनिक पत्र है

ପ୍ରଥମ ର ଡାଦଶ COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT OBS

५. (क) सन्धि

विद्या + आलय = विद्यालय

सत् + चिंता = सच्चिंता

मन: + बल = मनोबल

इन उदाहरणों में पहले शब्द का अन्तिम वर्ण (ध्वनि) और दूसरे शब्द का प्रथम वर्ण (ध्वनि) मिलकर एक हो गये हैं। इस तरह दो वर्णों के परस्पर मिलने से जो विकार या परिवर्तन होता है, उसे सन्धि कहते हैं।

सन्धि तीन प्रकार की होती है — स्वर-सन्धि, व्यंजन-सन्धि और विसर्ग-सन्धि।

(क) स्वर-सन्धि

दो स्वरवर्णों के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे स्वर-सन्धि कहते हैं। स्वरवर्णों का मेल निम्न प्रकार से होता है —

१. ह्रस्व या दीर्घ स्वर के साथ सवर्ण ह्रस्व या दीर्घ स्वर के मिलने पर वे दीर्घ-स्वर हो जाते हैं; जैसे —

प्रथम ध्वनि	+	द्वितीय ध्वनि	सन्धि	प्रथम शब्द	+	द्वितीय शब्द	सन्धियुक्त शब्द
अ	+	अ	आ	परम	+	अर्थ	परमार्थ
अ	+	आ	आ	हिम	+	आलय	हिमालय
आ	+	अ	आ	तथा	+	अपि	तथापि
आ	+	आ	आ	दया	+	आनन्द	दयानन्द

COMPETITIVE BOOKS
All Books With Solutions
OBS

प्रथम ध्वनि	+	द्वितीय ध्वनि	सन्धि	प्रथम शब्द	+	द्वितीय शब्द	सन्धियुक्त शब्द
इ	+	इ	ई	कवि	+	इन्द्र	कवीन्द्र
इ	+	ई	ई	गिरि	+	ईश	गिरीश
ई	+	इ	ई	मही	+	इन्द्र	महीन्द्र
ई	+	ई	ई	रजनी	+	ईश	रजनीश
उ	+	उ	ऊ	सु	+	उक्ति	सूक्ति
उ	+	ऊ	ऊ	लघु	+	ऊर्मि	लघूर्मि
ऊ	+	उ	ऊ	वधू	+	उत्सव	वधूत्सव
ऊ	+	ऊ	ऊ	भू	+	ऊर्ध्व	भूर्ध्व

२. 'अ' या 'आ' के साथ 'इ', 'ई' अथवा 'उ', 'ऊ' अथवा 'ऋ' के मिलने पर वे क्रमशः 'ए', 'ओ' और 'अर्' हो जाते हैं; जैसे —

प्रथम ध्वनि	+	द्वितीय ध्वनि	सन्धि	प्रथम शब्द	+	द्वितीय शब्द	सन्धियुक्त शब्द
अ	+	इ	ए	सुर	+	इन्द्र	सुरेन्द्र
अ	+	ई	ए	नर	+	ईश	नरेश
आ	+	इ	ए	महा	+	इन्द्र	महेन्द्र
आ	+	ई	ए	रमा	+	ईश	रमेश
अ	+	उ	ओ	सर्व	+	उदय	सर्वोदय
अ	+	ऊ	ओ	जल	+	ऊर्मि	जलोर्मि
आ	+	उ	ओ	यथा	+	उचित	यथोचित
आ	+	ऊ	ओ	महा	+	ऊर्मि	महोर्मि
अ	+	ऋ	अर्	सप्त	+	ऋषि	सप्तर्षि
आ	+	ऋ	अर्	महा	+	ऋषि	महर्षि

Odisha Board and NCERT All Books With Solutions OBS

३. 'अ' या 'आ' के साथ 'ए' या 'ऐ' अथवा 'ओ' या 'औ' के मिलने पर वे क्रमंश: 'ऐ' और 'औ' होते हैं; जैसे —

प्रथम ध्वनि	+	द्वितीय ध्वनि	सन्धि	प्रथम शब्द	+	द्वितीय शब्द	सन्धियुक्त शब्द
अ	+	ए	ऐ	एक	+	एक	एकैक
अ	+	ऐ	ऐ	मत	+	ऐक्य	मतैक्य
आ	+	ए	ऐ	सदा	+	एव	सदैव
आ	+	ऐ	ऐ	महा	+	ऐश्वर्य	महैश्वर्य
अ	+	ओ	औ	वन	+	ओषधि	वनौषधि
अ	+	औ	औ	परम	+	औदार्य	परमौदार्य
आ	+	ओ	औ	महा	+	ओषधि	महौषधि
आ	+	औ	औ	महा	+	औदार्य	महौदार्य

४. 'इ'/'ई', 'उ'/'ऊ', 'ऋ' के बाद कोई विजातीय स्वर के आने पर 'इ'/'ई' के स्थान पर 'य्'; 'उ'/'ऊ' के स्थान पर 'व्'; और 'ऋ' के स्थान पर 'र्' हो जाता है; जैसे —

COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT All Books With Solutions OBS

प्रथम ध्वनि	+	द्वितीय ध्वनि	सन्धि	प्रथम शब्द	+	द्वितीय शब्द	सन्धियुक्त शब्द
इ	+	अ	य	यदि	+	अपि	यद्यपि
इ	+	आ	या	इति	+	आदि	इत्यादि
इ	+	उ	यु	अति	+	उच्च	अत्युच्च
इ	+	ऊ	यू	नि	+	ऊन	न्यून
इ	+	ए	ये	प्रति	+	एक	प्रत्येक
ई	+	अ	य	देवी	+	अर्पण	देव्यर्पण
ई	+	आ	या	देवी	+	आगम	देव्यागम
ई	+	उ	यु	देवी	+	उपदेश	देव्युपदेश
ई	+	ऊ	यू	नदी	+	ऊर्मि	नद्यूर्मि
ई	+	ऐ	यै	देवी	+	ऐश्वर्य	देव्यैश्वर्य

प्रथम ध्वनि + द्वितीय ध्वनि	सन्धि	प्रथम शब्द + द्वितीय शब्द	सन्धियुक्त शब्द
उ + अ	व	सु + अल्प	स्वल्प
उ + आ	वा	सु + आगत	स्वागत
ऊ + आ	वा	वधू + आगमन	वध्वागमन
उ + इ	वि	अनु + इति	अन्विति
उ + ई	वी	अनु + ईक्षा	अन्वीक्षा
उ + ए	वे	अनु + एषण	अन्वेषण
ऋ + आ	रा	पितृ + आज्ञा	पित्राज्ञा

५. 'ए', 'ऐ', 'ओ' तथा 'औ' के बाद कोई विजातीय स्वर आए तो वे क्रमशः 'अय्', 'आय्', 'अव्', 'आव्' हो जाते हैं; जैसे —

प्रथम ध्वनि + द्वितीय ध्वनि	सन्धि	प्रथम शब्द + द्वितीय शब्द	सन्धियुक्त शब्द
ए + अ	अय	ने + अन	नयन
ऐ + अ	आय	नै + अक	नायक
ओ + अ	अव	पो + अन	पवन
औ + अ	आव	पौ + अक	पावक
औ + इ	आवि	नौ + इक	नाविक
औ + उ	आवु	भौ + उक	भावुक

COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT All Books With Solutions

(ख) व्यंजन सन्धि

व्यंजन के साथ स्वर या व्यजन के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं। इस सन्धि के निम्न प्रकार हैं —

१. 'क्, च्, ट्, त्, प्' ध्वनियों के बाद यदि कोई स्वर, इन वर्गों की ध्वनियों का तीसरा या चौथा वर्ण (ध्वनि), 'य्, र् अथवा 'व्' आए, तो पहला वर्ण उसी वर्ग का तीसरा वर्ण बन जाता है; जैसे —

- क् > ग् : दिक् + अन्त = दिगन्त, वाक् + ईश = वागीश,
  दिक् + गज = दिग्गज, दिक् + दर्शन = दिग्दर्शन।
- च् > ज् : अच् + आदि = अजादि।
- ट् > ड् : षट् + आनन = षड़ानन।
- त् > द् : सत् + आचार = सदाचार
  जगत् + गुरु = जगद्गुरु
  उत् + घाटन = उद्घाटन
  शरत् + रास = शरद्रास।
- प् > ब् : अप् + ज = अब्ज
  सुप् + अन्त = सुबन्त।

२. किसी भी वर्ग के पहले वर्ण (ध्वनि) के पश्चात् यदि नासिक्य व्यंजन हो, तो वह अपने वर्ग के नासिक्य-व्यंजन (पाँचवें-व्यंजन) में बदल जाता है; जैसे —

- क् > ङ् : वाक् + मय = वाङ्मय
- ट् > ण् : षट् + मास = षण्मास
- त् > न् : सत् + मार्ग = सन्मार्ग
  जगत् + नाथ = जगन्नाथ
  तत् + नाम = तन्नाम
- प् > म् : अप् + मय = अम्मय

३. (क) त्/द् के पश्चात् च्/छ्, ज्/झ्, ट्/ठ्, ड्/ढ् और ल् आए तो त्/द् क्रमशः च्, ज्, ट्, ड् और ल् बन जाता है; जैसे —

त्/द् > च् :	सत्	+	चरित्र	=	सच्चरित्र
	जगत्	+	छाया	=	जगच्छाया
> ज् :	सत्	+	जन	=	सज्जन
	विपद्	+	जनक	=	विपज्जनक
> ट् :	वृहत्	+	टीका	=	वृहट्टीका
> ड् :	उत्	+	डयन	=	उड्डयन
> ल् :	तत्	+	लीन	=	तल्लीन

(ख) त्/द् के पश्चात् 'श्' के आने पर, त्/द् का 'च्' एवं श् का 'छ्' हो जाता है; जैसे —

सत् + शास्त्र = सच्छात्र

उत् + श्वास = उच्छ्वास

(ग) त्/द् के पश्चात् 'ह्' के आने पर, त्/द् का 'द्' एवं ह् का 'ध्' हो जाता है; जैसे —

उत् + हार = उद्धार

पद् + हति = पद्धति

४. (क) 'म्' के बाद वर्ग्य व्यंजन के आने पर 'म्' उस वर्ग का पंचमवर्ण अथवा अनुस्वार बन जाता है; जैसे —

सम् + कल्प = सङ्कल्प / संकल्प

सम् + जय = सञ्जय / संजय

सम् + तोष = सन्तोष / संतोष

सम् + पूर्ण = सम्पूर्ण / संपूर्ण

COMPETITIVE BOOKS
Board and NCERT
Books with Solutions
OBS

(ख) 'म्' के बाद अवर्ग्य व्यंजन के आने पर 'म्' अनुस्वार बन जाता है; जैसे —

सम्	+ योग	= संयोग	सम्	+ लग्न	= संलग्न
सम्	+ वत्	= संवत्	सम्	+ हार	= संहार
सम्	+ रचना	= संरचना	सम्	+ सार	= संसार
सम्	+ शय	= संशय	सम्	+ रक्षक	= संरक्षक

५. (क) स्वर वर्ण के बाद 'छ्' आए, तो 'छ्' के पहले च् जुड़ जाता है; जैसे —

आ	+ छादन	= आच्छादन	अनु	+ छेद	= अनुच्छेद
परि	+ छेद	= परिच्छेद	वृक्ष	+ छाया	= वृक्षच्छाया

(ख) स्वरवर्ण 'इ', 'उ' के बाद दन्त्य 'स्' हो तो वह मूर्द्धन्य 'ष्' में बदल जाता है; जैसे—

वि	+ सम	= विषम	प्रति	+ सेध	= प्रतिषेध
सु	+ सुप्ति	= सुषुप्ति	नि	+ सेध	= निषेध

(ग) विसर्ग सन्धि

विसर्ग के साथ स्वर या व्यंजन के मेल से जो विकार उत्पन्न होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। यह सन्धि निम्न प्रकार से होती है —

१. विसर्ग के बाद च्/छ्, ट्/ठ्, त्/थ् के होने पर विसर्ग क्रमशः श्, ष्, स्, में बदल जाता है; जैसे—

च्/छ् > श्	:	निः	+	चल	=	निश्चल
		निः	+	छल	=	निश्छल
ट्/ठ् > ष्	:	धनुः	+	टंकार	=	धनुष्टंकार
		निः	+	ठुर	=	निष्ठुर
त्/थ् > स्	:	मनः	+	ताप	=	मनस्ताप

२. इः /उः के बाद क्, ख्, प्, फ् के होने पर विसर्ग 'ष्' में बदल जाता है; जैसे —

निः	+	कपट	=	निष्कपट
दुः	+	कर	=	दुष्कर
दुः	+	प्रकृति	=	दुष्प्रकृति
निः	+	फल	=	निष्फल

३. यदि विसर्ग के पूर्व 'अ' हो और उसके बाद वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण अथवा य्, र्, ल्, व्, ह् में से कोई वर्ण आए, तो विसर्ग 'ओ' में बदल जाता है; जैसे —

अधः	+	गति	=	अधोगति	मनः	+	घात	=	मनोघात
मनः	+	मय	=	मनोमय	मनः	+	योग	=	मनोयोग
मनः	+	रथ	=	मनोरथ	मनः	+	लीन	=	मनोलीन
वयः	+	वृद्ध	=	वयोवृद्ध	मनः	+	विकार	=	मनोविकार
यशः	+	धरा	=	यशोधरा	पुरः	+	हित	=	पुरोहित

४. यदि विसर्ग से पूर्व 'अ'/ 'आ' से कोई भिन्न स्वर हो, और उसके बाद कोई स्वर, वर्ग का तीसरा, चौथा, पाँचवाँ वर्ण अथवा य्, ल्, व् में से कोई व्यंजन आए, तो विसर्ग 'र्' या रेफ में बदल जाता है; जैसे —

दुः	+	उपयोग	=	दुरुपयोग	निः	+	गुण	=	निर्गुण
दुः	+	भावना	=	दुर्भावना	दुः	+	नीति	=	दुर्नीति
दुः	+	योग	=	दुर्योग	निः	+	विकार	=	निर्विकार

५. यदि विसर्ग के बाद 'र्' हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है और उससे पूर्व का स्वर दीर्घ बन जाता है; जैसे —

निः+रोग = नीरोग, निः+रव = नीरव, निः+रस = नीरस

६. यदि 'अ' के बाद विसर्ग हो और उसके बाद 'अ' से भिन्न कोई स्वर हो, तो विसर्ग का लोप हो जाता है; जैसे —

अतः + एव = अतएव

७. यदि 'अ' विसर्गयुक्त हो, और उसके बाद क्, ख्, प् या फ् हो, तो विसर्ग में कोई विकार नहीं होता; जैसे —

प्रातः + काल = प्रातःकाल

पयः + पान = पयःपान

अधः + पतन = अधःपतन

अन्तः + पुर = अन्तःपुर

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books with Solutions
OBS

अभ्यास - १७

१. निम्नलिखित शब्दों का सन्धि-विच्छेद कीजिए और बताइए कि वे स्वर, व्यंजन या विसर्ग — किस प्रकार की सन्धियाँ हैं ?

गीतांजलि, रवीन्द्र, सूक्ति, राजेन्द्र, सूर्योदय, देवर्षि, मतैक्य, महौषधि, यद्यपि, अत्यावश्यक, स्वागत, पित्राज्ञा, नायिका, पवन, दिगम्बर, दिग्गज, जगन्नाथ, छत्रच्छाया, सज्जन, उल्लेख, नीरस, दुस्तर, निष्काम, मनोहर, सरोज, दुरात्मा, निर्मल।

२. निम्नलिखित शब्दों की सन्धि कीजिए —

राम+अयन, गिरि+ईश, देव+ईश, महा+उत्सव, महा+ऋषि, सदा+एव, प्रति+उपकार, अनु+एषण, ने+अयन, पो+अन, जगत्+आनन्द, वाक्+मय, मनः+रथ, प्रातः+काल, अधः + पतन।

(ख) समास

राजा का पुत्र	-	राजपुत्र
माता और पिता	-	मातापिता, माता-पिता
लम्बा है उदर जिसका	-	लम्बोदर
रसोई के लिए घर	-	रसोईघर

यहाँ दो या दो से अधिक पदों को मिलाकर एक पद बनाया गया है। इस मिले हुए अर्थात् संक्षिप्त रूप को 'समास' कहते हैं। ऐसे पदों को मिलाकर लिखना चाहिए। कभी-कभी आवश्यक हो तो एक योजक चिह्न (-)का प्रयोग भी हम कर सकते हैं। मिले हुए एकपद को 'समस्त-पद' कहते हैं और अनेक पदों को 'विग्रह-पद'।

COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
OBS

समास के मुख्यतः चार भेद हैं– तत्पुरुष, अव्ययीभाव, द्वन्द्व और बहुव्रीहि।

१. तत्पुरुष समास

तत्पुरुष समास के पाँच भेद होते हैं —

(i) जिस समास में उत्तर-पद प्रधान होता है और पूर्व-पद के विभक्ति-चिह्न का लोप कर दिया जाता है, उसे कारक-आधारित तत्पुरुष समास कहते हैं। विभक्तियों के अनुसार इसके छह प्रकार होते हैं —

(क) कर्म तत्पुरुष	- गृह को आगत	-	गृहागत
	स्वर्ग को प्राप्त	-	स्वर्गप्राप्त
(ख) करण तत्पुरुष	- ईश्वर द्वारा दत्त	-	ईश्वरदत्त
	नीति से युक्त	-	नीतियुक्त
(ग) सम्प्रदान तत्पुरुष	- रसोई के लिए घर	-	रसोईघर
	हवन के लिए सामग्री	-	हवनसामग्री

(घ)	अपादान तत्पुरुष	- पद से च्युत	- पदच्युत
		ऋण से मुक्त	- ऋणमुक्त
(ङ)	सम्बन्ध तत्पुरुष	- राष्ट्र का पति	- राष्ट्रपति
		राम की कथा	- रामकथा
		विद्या का सागर	- विद्यासागर
(च)	अधिकरण तत्पुरुष	- आनन्द में मग्न	- आनन्दमग्न
		पुरुषों में सिंह	- पुरुषसिंह
		दान में वीर	- दानवीर
		आप पर बीती	- आपबीती
		घोड़े पर सवार	- घुड़सवार

(ii) जिस समास में विशेषण और विशेष्य का या उपमान और उपमेय का मेल हो एवं उत्तर-पद प्रधान हो, उसे **कर्मधारय** तत्पुरुष समास कहते हैं; जैसे —

नीली गाय - नीलगाय, महान् पुरुष- महापुरुष।

चन्द्र के समान मुख - चन्द्रमुख, चरण रूपी कमल - चरणकमल।

(iii) जिस समास में दो शब्दों के मध्य के पद या पदों का लोप हो उसे **मध्यपदलोपी तत्पुरुष** कहते हैं; जैसे —

दही में डूबा हुआ बड़ा - दहीबड़ा, बैलों से खींची जानेवाली गाड़ी - बैलगाड़ी, गुरु के सम्बन्ध से भाई - गुरुभाई।

COMPETITIVE BOOKS and NCERT All Books With Solutions OBS

(iv) जिस समास में पूर्व-पद सख्यावाचक विशेषण हो और उत्तरपद प्रधान हो, उसे **द्विगु समास** कहते हैं; जैसे —

पाँच वटों का समूह - पंचवटी, तीन फलों का समाहार - त्रिफला, तीन भुवनों का समूह - त्रिभुवन, चार राहों का मेल - चौराहा, नौ ग्रहों का समाहार - नवग्रह।

(v) जिस समास में अभाव या निषेध के अर्थ में किसी शब्द के पहले **अ, न, अन्, ना, गैर, बे, ला जैसे पद** लगते हैं, उसे **नञ् तत्पुरुष समास** कहते हैं; जैसे —

अकाल, अकाज, अछूत, नास्तिक, अनागत, अनहोनी, अनजाना, नालायक, नापसन्द, नाबालिग, गैरहाजिर, बेपरवाह, लापरवाह।

२. अव्ययीभाव समास

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT All Books With Solutions SBS

जिस समास का पूर्वपद प्रधान एवं अव्यय हो तथा उत्तरपद अप्रधान हो, उसे अव्ययीभाव समास कहते हैं। पूरे पद का प्रयोग क्रिया विशेषण की तरह होता है और वह स्वयं भी अव्यय बन जाता है; जैसे —

प्रति दिन - प्रतिदिन, यथा समय - यथासमय,
हर रोज - हररोज, भर पेट - भरपेट।

अव्ययों के दो बार कथन से भी अव्ययीभाव समास बनते हैं; जैसे —

बीचोंबीच, पहले-पहल।

३. द्वन्द्व समास

जिस समास में पूर्वपद और उत्तरपद दोनों पद प्रधान हों, उसे द्वन्द्व समास कहते हैं। ऐसे समास में बीच में आनेवाले समुच्चयबोधक पद या पदों का लोप हो जाता है; जैसे —

पाप और पुण्य - पापपुण्य, भात और दाल - भातदाल,
रात और दिन -रातदिन, राजा और रंक - राजारंक,
ऊँच और नीच - ऊँचनीच, जल और थल - जलथल।

४. बहुव्रीहि समास

जिस समास में पूर्व पद और उत्तर पद दोनों में से कोई भी प्रधान न हो और सभी पद मिलकर किसी अन्य अर्थ को व्यंजित करते हों, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं; जैसे —

षड़ानन	षट् हैं आनन जिसके	- कार्तिकेय
लम्बोदर	लम्बा है उदर जिसका	- गणेश
दशानन	दश आनन हैं जिसके	- रावण
चतुर्भुज	चार हैं भुजाएँ जिसकी	- विष्णु या नारायण
नीलकण्ठ	नीला है कण्ठ जिसका	- शिव
पीताम्बर	पीत है अम्बर जिसका	- श्रीकृष्ण
वीणापाणि	वीणा है पाणि में जिसके	- सरस्वती

उक्त विवेचन के आधार पर हम समास के प्रकारों को निम्न प्रकार से देख सकते हैं —

समास

- १. तत्पुरुष
  - (i) कारक आधारित तत्पुरुष
    - (क) कर्म
    - (ख) करण
    - (ग) सम्प्रदान
    - (घ) अपादान
    - (ङ) सम्बन्ध
    - (च) अधिकरण
  - (ii) कर्मधारय तत्पुरुष
  - (iii) मध्यपदलोपी तत्पुरुष
  - (iv) द्विगु तत्पुरुष
  - (v) नञ्-तत्पुरुष
- २. अव्ययीभाव
- ३. द्वन्द्व
- ४. बहुब्रीहि

COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT All Books With Solutions OBS

अभ्यास-१८

१. निम्नलिखित समस्त पदों के विग्रह कीजिए —

राजकन्या, नीलकमल, चौराहा, दशानन, भाई-बहन

२. निम्नलिखित विग्रह-पदों के समास रूप लिखिए—

राजा का दरवार, घन के समान श्याम, तीन लोकों का समूह, लम्बा है उदर जिसका, अन्न और जल।

३. निम्नलिखित समासों के नाम लिखिए —

शोकाकुल, देशभक्ति, भवसागर, पंचवटी, यथाशक्ति।

४. तत्पुरुष के कारक-आधारित समासों को उदाहरण देते हुए बताइए।

५. नञ्-तत्पुरुष समास से आप क्या समझते हैं ? उदाहरण देकर समझाइए।

(ग) उपसर्ग और प्रत्यय

उपसर्ग — जो शब्दांश शब्दों के पूर्व आकर उनके अर्थों में परिवर्तन कर देते हैं, वे उपसर्ग कहलाते हैं। उपसर्गों का स्वतन्त्र प्रयोग नहीं होता। नीचे कुछ उपसर्ग दिये जा रहे हैं —

संस्कृत के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अति	अधिकता	अत्यन्त, अत्युक्ति, अत्याचार, अतिशय, अतिवृष्टि, अतिरिक्त
अधि	ऊपर, श्रेष्ठ	अधीश, अधीक्षण, अध्यादेश, अधिकार, अधिकरण, अध्यक्ष
अनु	पीछे, समान	अनुकूल, अनुकरण, अनुचर, अनुज, अनुशासन, अनुवाद, अनुस्वार

COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT OBS

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अप	हीनता, बुरा	अपकार, अपकीर्त्ति, अपराध, अपशकुन अपयश, अपमान, अपशब्द
अभि	अधिकता, सामने, समीप	अभिप्राय, अभिलाषा, अभियान, अभ्यास, अभिभाषण, अभ्यागत, अभ्युदय
अव	नीच, हीन, बुरा	अवगुण, अवगत, अवनति, अवरोह, अवसान, अवशेष
आ	विरोध, तक, समेत, पूर्ण	आजीवन, आगमन, आजन्म, आमरण, आदान, आरक्त, आरक्षण, आचरण
उत्, उद्	ऊपर, उत्कृष्ट ऊँचा	उत्कण्ठा, उत्तम, उत्कर्ष, उद्गम, उद्योग, उल्लास, उच्छ्वास, उत्पत्ति
उप	समीपता, गौणता	उपकूल, उपमान, उपवन, उपमन्त्री, उपनयन, उपकार, उपदेश
दुर्, दुस्	कठिन, बुरा	दुर्गम, दुराचार, दुर्घटना, दुश्चिन्ता, दुस्साहस, दुर्लभ, दुस्सह, दुर्गति
नि	अच्छी तरह, भीतर	निरोध, नियम, निष्ठा, निवारण, निबन्ध, निवेदन, निवास
निर्, निस्	निषेध	निर्जन, निरादर, निर्दोष, निष्काम, निस्सन्देह, निश्चल, निर्यात, निरपराध
परा	पीछे, उलटा	पराक्रम, पराजय, परामर्श, पराभव
परि	चारों ओर, पूर्ण	परिक्रमा, परिजन, परिवर्तन, परिश्रम, परिणाम, परिचय

COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
प्र	अधिक, ऊपर	प्रगति, प्रचार, प्राचार्य, प्रदेश, प्रताप,
	पूर्ण का एक खण्ड	प्रक्रिया, प्रस्थान, प्रवाह, प्राध्यापक
प्रति	सामने, विरुद्ध,	प्रतिकूल, प्रतिध्वनि, प्रतिनिधि, प्रत्यक्ष,
	समान	प्रतिष्ठा, प्रतिस्पर्द्धा
वि	भिन्नता, विशेष	वियोग, विभाग, विदेश, विमुख, विधवा,
		विजातीय, विनय, विज्ञान
सम्, सं	अच्छा, साथ	सम्पूर्ण, संकल्प, संतोष, सम्मान,
		सम्मेलन, संगीत, संकोच, संरक्षण
सु	अच्छा, सहज	सुकर्म, सुलभ, सुकुमार, सुवास, सुजन,
		स्वागत, सुशिक्षित, सुबोध, सुगम, सुदूर

हिन्दी के उपसर्ग

अन	निषेध	अनजान, अनमोल, अनगिनत, अनपढ़
उन	एक कम	उनतीस, उनतालीस, उनचास
दु	उलटा	दुकाल,
नि	निषेध	निधड़क, निपूता, निहत्था, निडर
बिन	बिना, निषेध	बिनखाया, बिनजाना, बिनब्याहा, बिनदेखा
भर	पूरा, ठीक	भरपेट, भरपूर, भरसक

उर्दू के उपसर्ग

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
कम	थोड़ा, हीन	कमजोर, कमउम्र, कमअक्ल, कमबख्त
गैर	भिन्न	गैरकानूनी, गैरहाजिर, गैरसरकारी
ना	अभाव	नादान, नासमझ, नाराज, नापसन्द
बद	बुरा	बदनाम, बदबू, बदमाश, बदकिस्मत
बे	बिना, अभाव	बेईमान, बेकसूर, बेहोश, बेखबर
ला	बिना, अभाव	लाचार, लापता, लाजवाब, लापरवाह
हम	साथ	हमराही, हमदर्दी, हमसफर
हर	प्रत्येक	हरसाल, हररोज, हरचीज, हरदम

प्रत्यय

शब्दों के बाद जो शब्दांश लगाये जाते हैं, उन्हें प्रत्यय कहते हैं। प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं — १) कृत् प्रत्यय, २) तद्धित प्रत्यय।

धातु (क्रिया के मूलांश) के साथ जो प्रत्यय लगते हैं, उन्हें कृत् प्रत्यय और अन्य शब्दों के साथ जो प्रत्यय लगते हैं, उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं। कृत् प्रत्ययों से बने शब्दों को कृदन्त कहते हैं। तद्धित प्रत्ययों से बने शब्दों को तद्धितांत कहते हैं। कृत् प्रत्ययों और तद्धित प्रत्ययों के मेल से प्राय: संज्ञा और विशेषण बनते हैं।

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT All Books Solutions OBS

नीचे संस्कृत और हिन्दी के कुछ मुख्य प्रत्ययों के उदाहरण दिए जाते हैं—

कृत् प्रत्यय	धातु	निर्मित शब्द	कृत् प्रत्यय	धातु	निर्मित शब्द
अंत	लड़	लड़ंत	ई	हँस	हँसी
अक्कड़	पी	पिअक्कड़	एरा	बस	बसेरा
अन	गम्	गमन	ऐत	लड़	लड़ैत
अनीय	कृ	करणीय	ओड़	हँस	हँसोड़
आ	फेर	फेरा	ओड़ा	भाग	भगोड़ा
आ	पूज्	पूजा	औटी	कस	कसौटी
आई	पढ़	पढ़ाई	औता	समझ	समझौता
आऊ	टिक	टिकाऊ	औती	चुन	चुनौती
आकू	लड़	लड़ाकू	औना	खेल	खिलौना
आड़ी	खेल	खिलाड़ी	क	बैठ	बैठक
आन	उड़	उड़ान	त	खप	खपत
आनी	मथ	मथानी	ती	बढ़	बढ़ती
आप	मिल	मिलाप	न	बेल	बेलन
आलू	झगड़	झगड़ालू	ना	ढक	ढकना
आव	बह	बहाव	नी	ओढ़	ओढ़नी
आवट	लिख	लिखावट	वना	डर	डरावना
आवा	पछता	पछतावा	वाला	सुन	सुननेवाला
आस	पी	प्यास	वैया	गा	गवैया
आहट	चिल्ल	चिल्लाहट	सार	मिल	मिलनसार
इयल	सड़	सड़ियल	हार	हो	होनहार
इया	घट	घटिया	हारा	रख	राखनहारा

ପ୍ରଥମ ଓ ପ୍ରକାଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

तद्धित प्रत्यय	मूल शब्द	निर्मित शब्द	तद्धित प्रत्यय	मूल शब्द	निर्मित शब्द
अ	शिव	शैव	ऐत	लाठी	लठैत
आ	प्यास	प्यासा	ऐला	विष	विषैला
आई	अच्छा	अच्छाई	औती	बाप	बपौती
आना	साल	सालाना	ता	लघु	लघुता
आलु	ईर्ष्या	ईर्ष्यालु	दार	इज्जत	इज्जतदार
आस	मीठा	मिठास	नाक	दर्द	दर्दनाक
आहट	कड़वा	कड़वाहट	पन	बच्चा	बचपन
इक	दिन	दैनिक	पा	बूढ़ा	बुढ़ापा
इत	आनन्द	आनन्दित	बंद	हथियार	हथियारबंद
इमा	रक्त	रक्तिमा	मंद	अक्ल	अक्लमंद
इष्ट	स्वाद	स्वादिष्ट	मान्	बुद्धि	बुद्धिमान्
ई	गुण	गुणी	य	दिति	दैत्य
ईन	कुल	कुलीन	वंत	दया	दयावंत
ईय	केन्द्र	केन्द्रीय	वर	ताकत	ताकतवर
ईला	रंग	रंगीला	वाँ	पाँच	पाँचवाँ
ऊ	बाजार	बाजारू	वान्	धन	धनवान्
एय	कुन्ती	कौन्तेय	हरा	सोना	सुनहरा
एरा	मामा	ममेरा	हारा	लकड़ी	लकड़हारा

COMPETITIVE BOOKS
Odisha Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

(घ) अनेकार्थक शब्द

शब्दकोश में एक शब्द के अनेक अर्थ मिलते हैं, किन्तु किसी वाक्य में केवल एक ही अर्थ निकलता है। ऐसे शब्दों के अर्थ उस वाक्य में उनके सन्दर्भ से जाने जाते हैं। ऐसे कुछ शब्द यहाँ दिये जा रहे हैं —

अंक - संख्या, गोद, नाटक का अंक

अर्थ - व्याख्या, प्रयोजन, हेतु, धन, अभिप्राय, कारण, निमित्त

अम्बर - आकाश, वस्त्र

अकाल - सूखा, अनपेक्षित समय

अक्षर - वर्ण, ब्रह्म, नित्य, जिसका क्षय न हो

अमृत - पीयूष, जल, दूध

आम - आम नाम का फल, मामूली, साधारण

अन्तर - भेद, अवधि, मध्य, दूरी

उत्तर - उत्तर दिशा, प्रश्न का उत्तर

कर्ण - कान, त्रिभुज का कर्ण (एक रेखा), पतवार

कुल - वंश, सब मिलाकर

गुरु - शिक्षक, भारी या वजनी

गोली - दवा की गोली, बन्दूक की गोली, धागे की गोली

घन - घना, लोहार का बड़ा हथौड़ा, गणित में घन

टीका - तिलक, आलोचना या व्याख्या

दण्ड - सजा, विशिष्ट कसरत, डण्डा

COMPETITIVE BOOKS
Board and NCERT
All Books With Solutions

दल - समूह, पंखुड़ी (तुलसी दल)

द्विज - ब्राह्मण, पक्षी

नाक - नासिका, अंतरिक्ष

नाग - सर्प, हाथी

पत्र - पत्ता, चिट्ठी, पंख

पद - पैर या पग, उपाधि, कविता का पद, वाक्य में आये शब्द

पय - दूध, पानी

पृष्ठ - पीठ, कागज के पन्ने का एक ओर

पतंग - सूर्य, गुड्डी, पक्षी, पतिंगा (कीट)

फल - आम आदि फल, परीक्षा का फल, परिणाम

मंगल - मंगलवार, मंगल ग्रह, कल्याण, भला

मत - विचार, नहीं

वर्ण - रंग, अक्षर, जाति

विधि - ब्रह्मा, भाग्य, नियम, रीति

वर - दुल्हा, वरदान, श्रेष्ठ

स्नेह - प्रेम, तेल

हरि - विष्णु, इन्द्र, साँप, वानर, सिंह, हिरन, मोर

हार - फूलों का हार, पराजय

हल - प्रश्न का उत्तर या समाधान, खेती करने का हल

COMPETITIVE BOOKS
and NCERT
All Books With Solutions
OBS

(ङ) समानार्थक (या पर्यायवाची) शब्द

इस प्रकार के शब्द दो प्रकार के होते हैं —

— प्रथम प्रकार के शब्द वे हैं, जिनका प्रयोग मूल शब्द के बदले करने में कोई हानि नहीं है, क्योंकि उनके अर्थ समान होते हैं।

— द्वितीय प्रकार के शब्द वे हैं, जिनका प्रयोग खुले रूप में (एक के बदले दूसरे का) नहीं हो सकता, क्योंकि उनसे अर्थान्तर हो जाता है।

निम्न सूची में कुछ पर्यायवाची शब्द प्रथम प्रकार के हैं और कुछ द्वितीय प्रकार के—

अग्नि - आग, पावक, अनल, वैश्वानर

अश्व - घोड़ा, बाजि, तुरंग, घोटक, हय

असुर - दानव, दनुज, दैत्य, राक्षस, निशाचर

अमृत - पीयूष, सुधा, अमिय, मधु

अक्ल - बुद्धि, दिमाग

आकाश - आसमान, शून्य, अन्तरिक्ष

आँख - नेत्र, चक्षु, दृग, नयन, लोचन

ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions

आजादी - स्वतन्त्रता, स्वाधीनता

इच्छा - आकांक्षा, उत्कण्ठा, अभिलाषा, चाह, कामना

इन्द्र - सुरपति, शचीपति, देवराज, सुरराज, सुरेश

कपड़ा - वस्त्र, वसन, चीर, अम्बर, पट

कमल - पद्म, पंकज, जलज, सरसिज, अम्बुज, सरोज

घर - गृह, गेह, भवन, सदन, आवास, निवास, मकान

चन्द्रमा - इन्दु, शशि, सुधाकर, राकेश, कलानिधि, हिमांशु, सुधांशु, विधु, चाँद

चिड़िया	-	पक्षी, पंछी, खग, विहग
चुनाव	-	निर्वाचन, चुनना, छाँटना
जल	-	नीर, सलिल, पानी, वारि, उदक, अम्बु, तोय
तालाब	-	तड़ाग, जलाशय, सर, सरोवर
दिन	-	दिवस, दिवा, वासर
दुःख	-	पीड़ा, व्यथा, शोक, वेदना, सन्ताप, कष्ट
देह	-	शरीर, तन, काया, गात्र, बदन, कलेवर
धन	-	द्रव्य, सम्पदा, अर्थ, वित्त, सम्पत्ति, विभूति
नदी	-	सरिता, तटिनी, तरंगिणी
नाव	-	नौका, तरणी, जलयान
पर्वत	-	पहाड़, भूधर, शैल, गिरि, अचल
पवन	-	मरुत, हवा, वायु, मारुत, वात, समीर
पुत्र	-	तनय, बेटा, सुत, आत्मज, लड़का, बालक
पुत्री	-	कन्या, बेटी, तनया, सुता, आत्मजा, लड़की, बालिका
पुष्प	-	सुमन, फूल, कुसुम, प्रसून
पृथ्वी	-	भू, धरा, धरती, वसुधा, अवनी, वसुमती, भूमि
पेड़	-	पादप, द्रुम, वृक्ष
बन्दर	-	वानर, कपि, मर्कट
बादल	-	घन, जलद, जलधर, पयोद, मेह, मेघ, वारिद, नीरद
बाण	-	तीर, शर, विशिख, नाराच
बिजली	-	चपला, दामिनी, सौदामिनी, विद्युत्
ब्राह्मण	-	द्विज, विप्र, भूदेव

COMPETITIVE BOOKS
and NCERT
All Books With Solutions

मनुष्य - मानव, मनुज, आदमी, इन्सान

मछली - मत्स्य, झस, मीन

मित्र - सखा, साथी, बन्धु, सुहृद, स्वजन, दोस्त

राजा - भूप, नरेश, नरेन्द्र, सम्राट, नरपति, नृप, भूपाल, नरपाल

वन - जंगल, अरण्य, कानन, विपिन

स्त्री - नारी, अबला, औरत, महिला

संसार - जगत, जग, विश्व, लोक, भव

हाथी - हस्ती, कुंजर, गज

रात्रि - रात, यामिनी, निशा, विभावरी

समुद्र - सागर, सिंधु, पारावार, जलधि, रत्नाकर

सूर्य - दिनकर, रवि, भास्कर, दिनेश

हिमालय - हिमाद्रि, हिमगिरि, नगपति

(च) विलोम (या विपरीतार्थक) शब्द

ऐसे शब्द तीन प्रकार से बनते हैं — नकारात्मक उपसर्गों की सहायता से, उपसर्गों का परिवर्तन करके तथा बिलकुल भिन्न शब्दों का प्रयोग करके।

१. नकारात्मक उपसर्ग लगाकर

(अ, अन, अप, प्रति, वि, परा, अव, निर्, बे आदि)

अंत	- अनत	आदर	- निरादर
अर्थ	- अनर्थ	आशा	- निराशा
अभिज्ञ	- अनभिज्ञ	आचार	- अनाचार
आदि	- अनादि	आवश्यक	- अनावश्यक

आस्तिक	नास्तिक	मान	अपमान
आहूत	अनाहूत	योग	वियोग
इच्छा	अनिच्छा	राग	विराग
उचित	अनुचित	यश	अपयश
उदार	अनुदार	लिप्त	निर्लिप्त
उपयुक्त	अनुपयुक्त	वैतनिक	अवैतनिक
उपयोग	अनुपयोग	वादी	प्रतिवादी
एक	अनेक	विश्वास	अविश्वास
कीर्ति	अपकीर्ति	शकुन	अपशकुन
कसूर	बेकसूर	शान्ति	अशान्ति
घात	प्रतिघात	सम	विषम
चेतन	अचेतन	सत्य	असत्य
छली	निश्छल	सभ्य	असभ्य
जय	पराजय	सन्तोष	असन्तोष
जाति	विजाति	स्वस्थ	अस्वस्थ
ज्ञान	अज्ञान	स्थावर	अस्थावर
धर्म	अधर्म	स्थिर	अस्थिर
नित्य	अनित्य	हिंसा	अहिंसा

२. उपसर्गों का परिवर्तन करके

अनुकूल	प्रतिकूल	असीम	ससीम
अनुराग	विराग	आकर्षण	विकर्षण
अवनति	उन्नति	आदान	प्रदान
अपमान	सम्मान	आयात	निर्यात

COMPETITIVE BOOKS
Odisha Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

उपकार	-	अपकार	सरस	-	नीरस
उत्कर्ष	-	अपकर्ष	सुमार्ग	-	कुमार्ग
उत्कृष्ट	-	निकृष्ट	संकल्प	-	विकल्प
कुप्रबन्ध	-	सुप्रबन्ध	साकार	-	निराकार
निष्काम	-	सकाम	सार्थक	-	निरर्थक
प्रवृत्ति	-	निवृत्ति	सुकाल	-	अकाल
परतन्त्र	-	स्वतन्त्र	सुगन्ध	-	दुर्गन्ध
विपत्ति	-	सम्पत्ति	सुगम	-	दुर्गम
विधवा	-	सधवा	सुलभ	-	दुर्लभ
व्यष्टि	-	समष्टि	सदाचारी	-	दुराचारी
सहयोगी	-	प्रतियोगी	साक्षर	-	निरक्षर

३. भिन्न शब्दों का प्रयोग करके

अग्र	-	पश्च	आकाश	-	पाताल
अथ	-	इति	उदय	-	अस्त
अनुज	-	अग्रज	उतार	-	चढ़ाव
अमीर	-	गरीब	उत्थान	-	पतन
अमृत	-	विष	उत्तम	-	अधम
आदि	-	अन्त	उद्धत	-	विनीत
अन्धकार	-	प्रकाश	ऊँचा	-	नीचा
अधिक	-	कम	कडवा	-	मीठा
अपना	-	पराया	कठिन	-	सरल
आगे	-	पीछे	कनिष्ठ	-	वरिष्ठ
आय	-	व्यय	काला	-	गोरा

COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

कोमल	-	कठोर, कठिन	निकट	-	दूर
कृतज्ञ	-	कृतघ्न	पक्का	-	कच्चा
गरम	-	ठण्डा	पुराना	-	नया
गाँव	-	शहर	पण्डित	-	मूर्ख
गौण	-	मुख्य	पाप	-	पुण्य
गुण	-	दोष	प्राचीन	-	नवीन
गीला	-	सूखा	प्रश्न	-	उत्तर
घृणा	-	प्रेम	बाहर	-	भीतर
छोटा	-	बड़ा	मलिन	-	निर्मल
जरा	-	काफी, अधिक	मित्र	-	शत्रु
जल	-	स्थल	राग	-	द्वेष
ज्येष्ठ	-	कनिष्ठ	राजा	-	रंक
जीवन	-	मरण	रोगी	-	भोगी
जन्म	-	मृत्यु	वृहत्	-	क्षुद्र
जड़	-	चेतन	शत्रु	-	मित्र
झूठ	-	सच	शीत	-	उष्ण
डरपोक	-	निडर	सत्य	-	मिथ्या
तीव्र	-	मन्द	स्थावर	-	जंगम
थोड़ा	-	बहुत	स्थिर	-	चंचल
दिन	-	रात	सुप्त	-	जाग्रत
दोस्त	-	दुश्मन	सुख	-	दुःख
धनी	-	दरिद्र, निर्धन	हर्ष	-	शोक
निन्दा	-	स्तुति	हानि	-	लाभ

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solution
OBS

(छ) प्राय: समान रूप से उच्चरित किन्तु भिन्नार्थक शब्द

कुछ शब्द ऐसे हैं जो प्राय: समान रूप से उच्चरित होते हैं, किन्तु उन दोनों में अर्थ का अंतर होता है। उनके लिखने में भी हिज्जे का अन्तर होता है। ऐसे कुछ शब्दों की सूची यहाँ दी जा रही है —

प्रथम		द्वितीय	
शब्द	**अर्थ**	**शब्द**	**अर्थ**
अनल	- आग	अनिल	- वायु
अन्य	- दूसरा	अन्न	- अनाज, शस्य
अंश	- भाग	अंस	- कन्धा
अभिराम	- सुन्दर	अविराम	- लगातार
आहत	- घायल	आहट	- आवाज
उपेक्षा	- निरादर	अपेक्षा	- तुलना में, आशा
अवलम्ब	- सहारा	अविलम्ब	- तुरन्त
ओर	- तरफ	और	- तथा, एवं
कथा	- कहानी	कत्था	- पान में खाने का कत्था
कुल	- वंश	कूल	- किनारा
कर्म	- कार्य	क्रम	- सिलसिला
अपकार	- बुराई	उपकार	- भलाई
ग्रह	- नक्षत्र	गृह	- घर
गड़ना	- भीतर दबना या घुसना	गढ़ना	- बनाना
चिर	- सदा	चीर	- वस्त्र, कपड़ा
छात्र	- विद्यार्थी	क्षात्र	- क्षत्रिय

COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

प्रथम शब्द	अर्थ	द्वितीय शब्द	अर्थ
ज़रा	- थोड़ा	जरा	- बुढ़ापा
जलद	- बादल	जलज	- कमल
दिन	- दिवस	दीन	- गरीब
दशा	- हालत	दिशा	- ओर
दीप	- दिया	द्वीप	- टापू
निधन	- मृत्यु	निर्धन	- धनहीन
परदेश	- दूसरे का देश	प्रदेश	- प्रान्त
परवाह	- चिन्ता	प्रवाह	- नदी का प्रवाह
परिणाम	- नतीजा	प्रणाम	- नमस्कार
पर्याप्त	- काफी	प्राप्त	- जो मिला हो
प्रसाद	- अनुग्रह, भगवान का भोग	प्रासाद	- महल, भवन
परिहार	- त्याग	प्रहार	- मार, चोट
पानी	- जल	पाणि	- हाथ
पिता	- पिताजी	पीता	- 'पीना' क्रिया का एक रूप
चिता	- शव जलाने की लकड़ी का ढेर	चीता	- बाघ की जाति का जानवर
जलना	- स्वयं जलना	जिलाना	- दूसरे को जिलाना
जूठा	- उच्छिष्ट	झूठा	- झूठ, असत्य, झूठ बोलनेवाला

प्रथम शब्द	अर्थ	द्वितीय शब्द	अर्थ
तुरग या तुरंग	- घोड़ा	तरंग	- लहर
देश	- अंचल, राज्य	द्वेष	- शत्रुता, वैमनस्य
ढलाई	- घर की ढलाई	ढिलाई	- ढीलापन
बताना	- कहना, समझाना	बिताना	- व्यतीत करना
बलि	- पूजा की सामग्री	बली	- बलशाली
भवन	- घर, महल	भुवन	- संसार
मेला	- उत्सव में लोगों का एकत्रीकरण	मैला	- गन्दा
मुख	- मुँह	मुख्य	- प्रधान
लोटना	- जमीन पर लोटना	लौटना	- वापस आना
लगन	- मन लगना, धुन	लग्न	- शुभ मुहूर्त
लक्ष	- लाख	लक्ष्य	- उद्देश्य
वसन	- वस्त्र	व्यसन	- बुरी आदत
शव	- लाश, मुर्दा	सब	- कुल, सब लोग
शर	- तीर	सर	- तालाब, सरोवर
शुल्क	- फीस, मूल्य	शुक्ल	- सफेद
सास	- श्वशुर की पत्नी, पत्नी की माता	साँस	- श्वास-प्रश्वास
सुर	- देवता	सूर	- सूर्य
		शूर	- वीर
सर्ग	- सृष्टि, महाकाव्य का अध्याय	स्वर्ग	- देवताओं का लोक
हठ	- अडिग रहना	हट	- अलग होना

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

(ज) समूहवाची शब्द

धन का	कोष
शब्दों का	कोश
अनाज का	ढेर
किताबों का	ढेर
तारों का	मण्डल
मनुष्यों का	दल
राज्यों का	संघ
राष्ट्रों का	संघ
अंगूरों का	गुच्छा
जहाजों का	बेड़ा
पक्षियों का	झुण्ड
लताओं का	कुंज
यात्रियों का	समूह
धन की	राशि
मेघों की	माला
सिपाहियों की	टुकड़ी
सेना की	टुकड़ी
पण्डितों की	सभा
लोगों की	भीड़
मनुष्यों की	भीड़
गायकों की	मण्डली

COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solution
OBS

(झ) मुहावरे

अंगूठा दिखाना	- देने से मना करना।
अंधेरे घर का उजाला	- एकमात्र पुत्र।
अक्ल पर पत्थर पड़ना	- बुद्धि भ्रष्ट होना।
अड्डा जमाना	- जमकर रह जाना, एक स्थान पर रह जाना।
अपना उल्लू सीधा करना	- काम हासिल करना, स्वार्थ सिद्ध करना।
अपने पैरों खड़ा होना	- स्वावलम्बी होना।
आँख मारना	- इशारा करना।
आँख चुराना	- सामने न आना।
आँखें दिखाना	- डराना, धमकाना।
आँखें खुलना	- होश आना, चेत आना।
आँखें मूँदना	- मर जाना।
आँखों में धूल डालना	- धोखा देना।
आँसू पोंछना	- धीरज देना।
आटे दाल का भाव मालूम होना	- घर-गृहस्थी की कठिनाइयों का ज्ञान होना।
आपे से बाहर होना	- बहुत गुस्सा होना या क्रोध करना।
आस्तीन का साँप	- कपटी मित्र।
इधर उधर की हाँकना	- बेकार की बातें करना।
ईद का चाँद होना	- बहुत दिनों के बाद दिखाई देना।
उँगली उठाना	- दोष निकालना।
उलटी गंगा बहाना	- विरोधी बातें कहना।
उल्लू का पट्ठा	- महामूर्ख।
कलेजा ठण्डा होना	- सन्तोष होना।

COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT OBS

कुत्ते की मौत मरना	- बुरी हालत में मरना।
खाक छानना	- बेकार घूमना।
गले पड़ना	- भारस्वरूप होना।
गागर में सागर भरना	- थोड़े में ही बहुत अधिक कहना।
गुड़ गोबर होना	- काम बिगड़ना।
घाव पर नमक छिड़कना	- दु:खी व्यक्ति को अधिक सताना।
घाट घाट का पानी पीना	- बहुत अनुभवी होना।
घर बसाना	- विवाह करना।
घोड़े बेचकर सोना	- निश्चिन्त होकर सोना।
चकमा देना	- धोखा देना।
चिकना घड़ा होना	- मान अपमान का प्रभाव न पड़ना।
चुल्लू भर पानी में डूब मरना	- अत्यन्त लज्जित होना।
चूड़ियाँ पहनना	- कायर होना।
चोटी का पसीना एड़ी पर आना	- बहुत मेहनत करना।
छक्के छुड़ाना	- बुरी तरह हराना।
छू मंतर होना	- भाग जाना।
छोटा मुँह बड़ी बात	- हैसियत से बढ़कर बात करना।
जहर का घूँट पीना	- अपमान सहना।
जी तोड़ काम करना	- बहुत मेहनत करना।
जी भर आना	- करुणा आदि से विचलित होना।
जूते चाटना	- खुशामद करना।
जले पर नमक छिड़कना	- कष्ट को अधिक बढ़ाना।
टका-सा जवाब देना	- साफ मना कर देना।
टस से मस न होना	- स्थिर रहना, जरा भी इधर उधर न होना।

COMPETITIVE BOOKS
Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

टेढ़ी खीर - कठिन काम ।

टाँग अड़ाना - रुकावट डालना ।

ठन ठन गोपाल - जेब खाली ।

ढिंढोरा पीटना - प्रचार करना ।

ढोल में पोल - भीतर से दोष भरा रहना ।

तलवे चाटना - खुशामद करना ।

तिनके का सहारा - थोड़ा सहारा ।

थाह लेना - पता लगाना ।

दंग रह जाना - चकित होना ।

दाँत खट्टे करना - हरा देना ।

दाँत पीसना - क्रोध करना ।

दाल न गलना - बस न चलना, काम न बनना ।

दूध का दूध, पानी का पानी करना - ठीक ठीक न्याय करना ।

धज्जियाँ उड़ाना - दुर्गति करना ।

नजर करना - भेंट करना ।

नभ के तारे छूना - असम्भव कार्य कर सकना ।

नमक-मिर्च लगाना - बढ़ा-चढ़ाकर कहना ।

नाक रगड़ना - खुशामद करना ।

नाक काटना - बदनाम करना ।

नाक में दम करना - परेशान करना ।

नाकों चने चबाना - परेशान होना ।

नौ दो ग्यारह होना - चंपत होना ।

परदा डालना - किसी बात को छिपाना ।

पाँचों उँगलियाँ घी में होना - बहुत लाभ होना ।

ପ୍ରଥମ ରୁ ଦ୍ୱାଦଶ
COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

पानी-पानी होना	- लज्जित होना ।
पानी फेरना	- नष्ट करना ।
पापड़ बेलना	- कष्ट उठाना ।
पेट में चूहे कूदना	- भूख से परेशान होना ।
पौ बारह होना	- खूब लाभ होना, मजे में होना ।
पानी के मोल	- बहुत सस्ता ।
बगल झाँकना	- निरुत्तर हो जाना ।
बाल की खाल निकालना	- बेकार की आलोचना करना ।
बाल बाँका न होना	- कुछ भी हानि न होना ।
मक्खी मारना	- बेकार बैठना ।
लड़ाई मोल लेना	- झगड़ा पैदा करना ।
लोहा लेना	- लड़ाई करना, मुकाबला करना ।
लोहा मानना	- श्रेष्ठता स्वीकार करना ।
लोहे के चने चबाना	- कठिन काम करना ।
लकीर का फकीर	- पुरानी प्रथा को माननेवाला ।
सिर नीचा होना	- बेइज्जत होना ।
सिर पर पैर रखकर भागना	- जल्दी भाग जाना ।
हँसी उड़ाना	- मजाक करना ।
हाथ पसारना	- कुछ माँगना ।
हाथ उठाना	- मारना ।
हाथ पाँव फूलना	- भयभीत होना, डरना ।
हाथ का मैल	- छोटी चीज, मूल्यहीन ।
हाथ धो बैठना	- खो देना ।
होश उड़ना	- घबरा जाना ।

COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
All Books With Solutions
OBS

(ञ) कहावतें (या लोकोक्तियाँ)

अंधा क्या चाहे दो आँखें।	- इच्छित वस्तु का प्राप्त हो जाना।
अंधों में काना राजा।	- गुणहीनों में कमगुणवाले का महत्त्व।
अक्ल बड़ी या भैंस।	- बल से बुद्धि बड़ी होती है।
अधजल गगरी छलकत जाय।	- अल्पज्ञानी घमण्ड करता है।
आगे कुआँ पीछे खाई।	- दोनों ओर विपत्तियाँ।
आप भला तो जग भला।	- स्वयं ठीक हो तो सब कुछ ठीक।
आम के आम गुठलियों के दाम।	- दोहरा लाभ।
इस हाथ दे, उस हाथ ले।	- काम का फल शीघ्र ही भोगना।
ईंट का जवाब पत्थर।	- दुष्टों के प्रति कड़ा रुख अपनाना।
उलटा चोर कोतवाल को डाँटे।	- दोषी निर्दोष का दोष दिखाए।
ऊँची दुकान फीका पकवान।	- केवल बाहरी दिखावा।
ऊँट के मुँह में जीरा।	- आवश्यकता से बहुत कम मिलना।
ऊखल में सिर दिया तो मूसल से क्या डरना।	- कठिन काम में हाथ लगाकर खतरे या बाधा की परवाह न करना।
ऊधो का लेना न माधो का देना।	- सम्पर्क न रखना।
एक पंथ दो काज।	- एक ही साधन से दो-दो काम होना।
एक तो चोरी, दूसरे सीनाजोरी।	- गलती करना और साथ ही रोब भी गाँठना।
एक म्यान में दो तलवार।	- एक ही जगह समान महत्त्व की दो वस्तुएँ नहीं रह सकतीं।
एक हाथ से ताली नहीं बजती।	- झगड़ा दो में ही हो सकता है।
काठ की हाँड़ी दूसरी बार नहीं चढ़ती।	- छल-कपट सदा नहीं चलता।

का बरसा जब कृषी सुखाने । - अवसर बीत जाने पर वस्तु पाने से लाभ नहीं होता ।

काला अक्षर भैंस बराबर । - बिलकुल अनपढ़ ।

खोदा पहाड़ और निकली चुहिया । - बहुत परिश्रम का थोड़ा फल ।

गरजे सो बरसे नहीं । - बात बनानेवाले कुछ नहीं कर पाते ।

गुरु गुड़, चेला चीनी । - गुरु से चेले का आगे बढ़ जाना ।

घर का भेदी लंका ढाहे । - अपने लोगों की फूट बुरी होती है ।

घर की मुर्गी दाल बराबर । - अपनी चीज की कद्र नहीं होती ।

चमड़ी जाय तो जाय पर दमड़ी न जाय । - महा कृपण ।

चार दिन की चाँदनी फिर अँधेरी रात । - धन, पद आदि अस्थायी हैं ।

चोर की दाढ़ी में तिनका । - अपने पाप से ही डर ।

चोर चोर मौसेरे भाई । - बुरे लोग इकट्ठे हो जाते हैं ।

छठी का दूध याद आना । - बहुत बुरी दशा में पड़ना ।

छोटा मुँह, बड़ी बात । - छोटे लोगों का बढ़-चढ़कर बोलना ।

जब तक साँस, तब तक आस । - अन्त समय तक आशा रखना ।

जल में रहकर मगर से वैर । - अधिकारियों से वैर ठीक नहीं ।

जिन ढूँढ़ा तिन पाइयाँ गहरे पानी पैठ । - कठिन परिश्रम से सफलता मिलती है ।

जिस पत्तल में खाना उसी में छेद करना । - उपकार के बदले अपकार करना । कृतघ्नता ।

जिसकी लाठी उसकी भैंस । - ताकतवर की ही विजय ।

जैसा देश, वैसा वेश । - स्थान या परिस्थिति के अनुसार काम करना ।

जैसी करनी, वैसी भरनी । - काम के अनुसार ही फल पाना ।

COMPETITIVE BOOKS ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT OBS

डूबते को तिनके का सहारा।	- बड़ी संकट में थोड़ी सी सहायता भी सहारा देती है।
तू डाल डाल मैं पात पात।	- दोनों चालाक।
तेते पाँव पसारिए जेती लाँबी सौर।	- अपनी शक्ति के अनुसार ही काम करना।
थूककर चाटना।	- देकर वापस लेना।
थोथा चना बाजे घना।	- मूर्ख अधिक बोलते हैं; सार कम, आडम्बर बहुत।
दीवार के भी कान होते हैं।	- गुप्त बात कभी छिप नहीं सकती।
दूध का दूध, पानी का पानी।	- सच्चा न्याय। जरा भी पक्षपात नहीं।
दूध का जला मट्ठा भी फूँक-फूँक कर पीता है	- धोखा खाने पर आदमी सँभल जाता है।
दूर के ढोल सुहावने।	- दूर की बात अच्छी लगती है।
धोबी का कुत्ता न घर का न घाट का।	- जो कहीं भी स्थिर नहीं रहता, अस्थिर।
न रहेगा बाँस न बजेगी बाँसुरी।	- मूल से नष्ट करना चाहिए।
नाच न जाने आँगन टेढ़ा।	- अपना दोष होने पर भी दूसरे को दोष देना।
नाम बड़े, दर्शन थोड़े।	- बाहरी तड़क-भड़क, पर गुण बहुत कम।
नेकी और पूछ-पूछ ?	- भलाई करने में किसी से पूछना क्या ?
नौ नगद न तेरह उधार।	- नगद अच्छा है, उधार नहीं।
पर उपदेश कुशल बहुतेरे।	- दूसरों को उपदेश देना आसान है।
पराधीन सपनेहु सुख नाहीं।	- पराधीनता में सुख सम्भव ही नहीं।

COMPETITIVE BOOKS Board and NCERT All Books With Solutions OBS

बन्दर क्या जाने अदरख का स्वाद।	- गुणहीन व्यक्ति वस्तु का मूल्य नहीं आँक सकते।
बहती गंगा में हाथ धोना।	- अवसर से लाभ उठाना।
बीती ताहि बिसार दे, आगे की सुधि लेय।	- बीती बातें भूलकर भविष्य में ठीक से काम करना चाहिए।
बिल्ली के भागों छींका टूटा।	- अकस्मात् ही काम हो जाना।
भागते चोर की लंगोटी सही।	- जो कुछ मिल गया वही अच्छा।
मन चंगा तो कठौती में गंगा।	- पवित्र मन ही तीर्थ है।
मान न मान मैं तेरा मेहमान।	- जबरदस्ती किसी के गले पड़ना।
मियाँ की दौड़ मस्जिद तक।	- सीमित क्षेत्र में काम करना।
मुँह में राम बगल में छूरी।	- कपटपूर्ण मित्रता।
साँप मरे ना लाठी टूटे।	- काम बन जाए, हानि भी न हो।
सिर मुँडाते ओले पड़े।	- कार्य आरंभ करते ही मुसीबत आई।
सोने में सुगन्ध होना।	- अच्छी वस्तु में और भी गुण बढ़ना।
हाथ कंगन को आरसी क्या।	- प्रत्यक्ष के लिए प्रमाण की क्या जरूरत।
हाथी के दाँत दिखाने के और खाने के और।	- कहना एक प्रकार से तथा करना भिन्न प्रकार से।
हींग लगे न फिटकरी, रंग चोखा आवे।	- बिना खर्च किए काम अच्छा होना।
हीरे की कद्र जौहरी जाने।	- गुणवान व्यक्ति ही गुणवान को पहचानता है।
होनहार बिरवान के होत चीकने पात।	- होनहार व्यक्ति के लक्षण शुरू से ही मालूम पड़ जाते हैं।

COMPETITIVE BOOKS
ଓଡ଼ିଶା Board and NCERT
OBS